2 शमूएल

दाऊद को शाऊल की मृत्यु का पता चलता है

1 अमालेकियों को पराजित करने के बाद दाऊद सिकलग लौटा और वहाँ दो दिन ठहरा। यह शाऊल की मृत्यु के बाद हुआ। 2तीसरे दिन एक युवक सिकलग आया। वह व्यक्ति उस डेरे से आया जहाँ शाऊल था। उस व्यक्ति के वस्त्र फटे थे और उसके सिर पर धूलि थी। वह व्यक्ति दाऊद के पास आया। उसने दाऊद के सामने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।

3दाऊद ने उस व्यक्ति से पूछा, "तुम कहाँ से आये हो?"

उस व्यक्ति ने दाऊद को उत्तर दिया, "मैं इस्राएलियों के डेरे से बच निकला हूँ।"

4दाऊद ने उस से कहा, "कृपया मुझे यह बताओ कि युद्ध किसने जीता?"

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हमारे लोग युद्ध से भाग गए। युद्ध में अनेकों लोग गिरे और मर गये हैं। शाऊल और उसका पुत्र योनातन दोनों मर गये हैं।"

5दाऊद ने युवक से पूछा, "तुम कैसे जानते हो कि शाऊल और उसका पुत्र योनातन दोनों मर गए हैं?"
6युवक ने दाऊद से कहा, "मैं गिलबो पर्वत पर था। वहाँ मैंने शाऊल को अपने भाले पर झुकते देखा। पलिश्ती रथ और घुडसवार उसके निकट से निकट आते जा रहे थे। 7शाऊल पीछे मुड़ा और उसने मुझे देखा। उसने मुझे पुकारा। मैंने उत्तर दिया, मैं यहाँ हूँ। 8तब शाऊल ने मुझसे पूछा, 'तुम कौन हो?' मैंने उत्तर दिया, 'मैं अमालेकी हूँ।' 9शाऊल ने कहा, 'कृपया मुझे मार डालो। मैं बुरी तरह घायल हूँ और मैं पहले से ही लगभग मर चुका हूँ।' 10इसलिये मैं रुका और उसे मार डाला। वह इतनी बुरी तरह घायल था कि मैं समझ गया कि वह जीवित नहीं रह सकता। तब मैंने उसके सिर से मुकुट और भुजा से बाजूबन्द उतारा और मेरे स्वामी, मैं मुकुट और बाजूबन्द यहाँ आपके लिये लाया हूँ।

11तब दाऊद ने अपने वस्त्रों को यह प्रकट करने के लिये फाड़ डाला कि वह बहुत शोक में डूबा है। दाऊद के साथ सभी लोगों ने यही किया। 12वे बहुत दु:खी थे और रोये। उन्होंने शाम तक कुछ खाया नहीं। वे रोये क्योंकि शाऊल और उसका पुत्र योनातन मर गए थे। दाऊद और उसके लोग यहोवा से उन लोगों के लिये रोये जो मर गये थे, और वे इस्राएल के लिये रोये। वे इसलिये रोये कि शाऊल, उसका पुत्र योनातन और बहुत से इस्राएली युद्ध मे मारे गये थे।

दाऊद अमालेकी युवक को मार डालने का आदेश देता है

13दाऊद ने उस युवक से बातचीत की जिसने शाऊल की मृत्यु की सूचना दी। दाऊद ने पूछा, "तुम कहाँ के निवासी हो?"

युवक ने उत्तर दिया, "मैं एक विदेशी का पुत्र हूँ। मैं अमालेकी हूँ।"

14दाऊद ने युवक से पूछा, "तुम यहोवा के चुने राजा को मारने से भयभीत क्यों नहीं हुए?"

15-16तब दाऊद ने अमालेकी युवक से कहा, "तुम स्वयं अपनी मृत्यु के लिये जिम्मेदार हो। तुमने कहा कि तुमने यहोवा के चुने हुये राजा को मार डाला। इसलिये तुम्हारे स्वयं के शब्दों ने तुम्हें अपराधी सिद्ध किया है।" तब दाऊद ने अपने सेवक युवकों में से एक युवक को बुलाया और अमालेकी को मार डालने को कहा!" इस्राएली युवक ने अमालेकी को मार डाला।

शाऊल और योनातन के बारे में दाऊद का शोकगीत

17दाऊद ने शाऊल और उसकेपुत्र योनातन के बारे में एक शोकगीत गाया। 18दाऊद ने अपने व्यक्तियों से इस गीत को यहूदा के लोगों को सिखाने को कहा, "इस शोकगीत को "धनुष" कहा गया है। यह गीत याशार की पुस्तक में लिखा है।

19"ओह इस्राएल, तुम्हारा सौन्दर्य तुम्हारे पहाड़ों में नष्ट हुआ। ओह, कैसे शक्तिशाली पुरुष धराशायी हो गए!

20इसे गत में न कहो। इसे अश्कलोन की गलियों में घोषित न करो। इससे पलिश्तियों के नगर प्रसन्न होंगे! खतनारहित * उत्सव मनायेंगे।

21गिलबो के पर्वत पर ओस और वर्षा न हो, उन खेतों से आने वाली बलि-भेंटे न हों। शक्तिशाली पुरुषों

खतनारहित वे व्यक्ति जिनका खतना न हुआ हो। इसका तात्पर्य पलिश्ती था, यहूदी नहीं।

की ढाल वहाँ गन्दी हुई, शाऊल की ढाल तेल से चमकाई नहीं गई थी। *

22योनातन के धनुष ने अपने हिस्से के शत्रुओं को मारा, और शाऊल की तलवार ने अपने हिस्से के शत्रुओं को मारा! उन्होंने उन व्यक्तियों के खून को छिड़का जो अब मर चुके हैं, उन्होंने शक्तिशाली व्यक्तियों की चर्बी को नष्ट किया है।

23शाऊल और योनातन, एक दूसरे से प्रेम करते थे। वे एक दूसरे से सुखी रहे जब तक वे जीवित रहे, शाऊल–योनातन मृत्यु में भी साथ रहे! वे उकाब से तेज भी जाते थे, वे सिंह से अधिक शक्तिशाली थे।

24इस्राएल की पुत्रियों, शाऊल के लिये रोओ! शाऊल ने तुम्हें लाल पहनावे दिये, शाऊल ने तुम्हारे वस्त्रों पर स्वर्ण आभूषण सजाएं हैं।

25शक्तिशाली पुरुष युद्ध में काम आए। योनातन गिलबो पर्वत पर मरा।

26मेरे भाई योनातन, मैं तुम्हारे लिये रोता हूँ! मैंने तुम्हारी मित्रता का सुख इतना पाया, तुम्हारा प्रेम मेरे प्रति उससे भी अधिक गहरा था, जितना एक स्त्री का प्रेम होता है।

27शक्तिशाली पुरूष युद्ध में काम आए, युद्ध के शस्त्र चले गये हैं।"

दाऊद और उसके लोग हेब्रोन जाते हैं

2 बाद में दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। दाऊद ने कहा, "क्या मुझे यहूदा के किसी नगर में जाना चाहिये?"

यहोवा ने दाऊद से कहा, "जाओ।"

दाऊद ने पूछा, "मुझे, कहाँ जाना चाहिये?"

यहोवा ने उत्तर दिया,"हेब्रोन को।"

2इसलिये दाऊद वहाँ गया। उसकी दोनों पत्नियाँ उसके साथ गई। (वे यिज्रेली की अहीनोअम और कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल थीं।) 3दाऊद अपने लोगों और उनके परिवारों को भी लाया। वे हेब्रोन तथा पास के नगर में बस गये।

दाऊद याबेश के लोगों को धन्यवाद देता है

4यहूदा के लोग हेब्रोन आये और उन्होंने दाऊद का अभिषेक यहूदा के राजा के रूप में किया। तब उन्होंने दाऊद से कहा, "याबेश गिलाद के लोग ही थे जिन्होंने शाऊल को दफनाया।"

5दाऊद ने याबेश गिलाद के लोगों के पास दूत भेजे। इन दूतों ने याबेश के लोगों को दाऊद का सन्देश दिया "यहोवा तुमको आशीर्वाद दें, क्योंकि तुम लोगों ने अपने स्वामी शाऊल के प्रति, उसकी दग्ध अस्थियों* को दफनाकर, दया दिखाई है। 6यहोवा अब तुम्हारे प्रति दयालु और सच्चा रहेगा। मैं भी तुम्हारे प्रति दयालु रहूँगा क्योंकि तुम लोगों ने शाऊल की दग्ध अस्थियाँ दफनाई है। 7अब शक्तिशाली और वीर बनो, तुम्हारे स्वामी शाऊल मर चुके हैं और यहूदा के परिवार समूह ने अपने राजा के रूप में मेरा अभिषेक किया है।"

ईशबोशेत राजा होता है

8नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का सेनापति था अब्नेर शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को महनैम ले गया। 9उस स्थान पर अब्नेर ने ईशबोशेत को गिलाद, आशेर, यिज्रेल, एप्रैम और बिन्यामीन का राजा बनाया। ईशबोशेत सारे इस्राएल का राजा बन गया।

10ईशबोशेत शाऊल का पुत्र था। ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब उसने इस्राएल पर शासन करना आरम्भ किया। उसने दो वर्ष तक शासन किया। किन्तु यहूदा का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था। 11दाऊद हेब्रोन में यहूदा के परिवार समूह का राजा सात वर्ष छ: महीने तक रहा।

प्राणघातक मुकाबला

12नेर का पुत्र अब्नेर और शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के सेवकों ने महनैम को छोड़ा। वे गिबोन को गए। 13सरूयाह का पुत्र योआब और दाऊद के सेवकगण भी गिबोन गए। वे अब्नेर और ईशबोशेत के सेवकों से, गिबोन के चश्में पर मिले। अब्नेर की टोली हौज के एक ओर बैठी थी। योआब की टोली हौज की दूसरी ओर बैठी थी।

144अब्नेर ने योआब से कहा, "हम लोग युवकों को खड़े होने दें और यहाँ एक मुकाबला हो जाने दो।"

योआब ने कहा, "हाँ, उनमें मुकाबला हो जाने दों।"

15तब युवक उठे। दोनों टोलियों ने मुकाबले के लिये अपने युवकों को गिना। दाऊद के सैनिकों में से बारह युवक चुने गये। 16हर एक युवक ने अपने शत्रु के सिर को पकड़ा और अपनी तलवार अन्दर भोंक दी। अत: युवक एक ही साथ गिर पड़े। यही कारण है कि वह स्थान "तेज चाकुओं का खेत" कहा जाता है। यह स्थान गिबोन में है।

अब्नेर असाहेल को मार डालता है

17उस दिन मुकाबला भयंकर युद्ध में बदल गया। दाऊद के सेवकों ने अब्नेर और इस्राएलियों को हरा दिया। 18सरूयाह के तीन पुत्र थे, योआब, अबीश और

शाऊल की ... नहीं थी या शाऊल की ढाल का अभिषेक तेल से नहीं हुआ था।

उसकी दग्ध अस्थियों शाऊल और योनातन दोनों के शव जलाये गये थे। देखें शमू. 31:12

असाहेल। असाहेल तेज दौड़नेवाला था। वह जंगली हिरन
की तरह तेज दौड़ता था। **19**असाहेल ने अब्नेर का
पीछा किया। असाहेल सीधे अब्नेर की ओर दौड़ गया।
20अब्नेर ने मुड़कर देखा और पूछा, "क्या तुम असाहेल
हो?"

असाहेल ने कहा, "मैं हूँ।"

21अब्नेर असाहेल को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था।
तब अब्नेर ने असाहेल से कहा, "मेरा पीछा करना
छोड़ो अपनी दायीं या बाईं ओर मुड़ो और युवकों में से
किसी एक की कवच अपने लिये ले लो।" किन्तु असाहेल
ने अब्नेर का पीछा करना छोड़ने से इन्कार कर दिया।

22अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा,"मेरा पीछा करना
छोड़ो। यदि तुम पीछा करना नहीं छोड़ते तो मैं तुमको
मार डालूँगा। यदि मैं तुम्हें मार डालूँगा तो मैं फिर तुम्हारे
भाई योआब का मुख नहीं देख सकूँगा।"

23किन्तु असाहेल ने अब्नेर का पीछा करना नहीं
छोड़ा। इसलिये अब्नेर ने अपने भाले के पिछले भाग
का उपयोग किया और असाहेल के पेट में उसे घुसेड़
दिया। भाला असाहेल के पेट में इतना गहरा धँसा कि
वह उसकी पीठ से बाहर निकल आया। असाहेल वहीं
तुरन्त मर गया।

योआब और अबीशै अब्नेर का पीछा करते हैं

असाहेल का शरीर जमीन पर गिर पड़ा। लोग उस के
पास दौड़कर गये, और रुक गए। **24**किन्तु योआब और
अबीशै ने अब्नेर का पीछा करना जारी रखा।

जिस समय वे अम्मा पहाड़ी पर पहुँचे सूर्य डूब रहा था।
(अम्मा पहाड़ी गीह के सामने गिबोन मरुभूमि के रास्ते
पर थी।) **25**बिन्यामीन परिवार समूह के लोग अब्नेर
के पास आए। वे सभी एक साथ पहाड़ी की चोटी पर
खड़े हो गए।

26अब्नेर ने चिल्लाकर योआब को पुकारा। अब्नेर
ने कहा, "क्या हमें लड़ जाना चाहिये और सदा के लिये
एक दूसरे को मार डालना चाहिये? निश्चय ही तुम
जानते हो कि इसका अन्त केवल शोक होगा। लोगों से
कहो कि अपने ही भाईयों का पीछा करना बन्द करें।"

27तब योआब ने कहा, "यह तुमने जो कहा वह ठीक
है। यहोवा शाश्वत है, यदि तुमने कुछ कहा नहीं होता
तो लोग अपने भाइयों का पीछा सवेरे तक भी करते
रहते।" **28**तब योआब ने एक तुरही बजाई और उसके
लोगों ने इस्राएलियों का पीछा करना बन्द किया। उन्होंने
और आगे इस्राएलियों से लड़ने का प्रयत्न नहीं किया।

29अब्नेर और उसके लोग यरदन घाटी से होकर रात
भर चले। उन्होंने यरदन घाटी को पार किया। वे पूरे
दिन चलते रहे और महनैम पहुँचे।

30योआब अब्नेर का पीछा करना बन्द करने के बाद
अपनी सेना में वापस लौट गया। जब योआब ने लोगों
को इकट्ठा किया, दाऊद के उन्नीस सेवक लापता थे।
असाहेल भी लापता था। **31**किन्तु दाऊद के सेवकों ने
बिन्यामीन परिवार समूह के तीन सौ साठ सदस्यों को,
जो अब्नेर का अनुसरण कर रहे थे, मार डाला था।
32दाऊद के सेवकों ने असाहेल को लिया और उसे
बेतलेहेम में उसके पिता के कब्रिस्तान में दफनाया।

योआब और उसके व्यक्ति रात भर चलते रहे। जब वे
हेब्रोन पहुँचे तो सूरज निकला।

इस्राएल और यहूदा के बीच युद्ध

3 शाऊल के परिवार और दाऊद के परिवार में
लम्बे समय तक युद्ध चलता रहा।* दाऊद
अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया। और शाऊल का
परिवार कमजोर पर कमजोर होता गया।

दाऊद के छ: पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए

2दाऊद के ये छ: पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए थे। प्रथम
पुत्र अम्नोन था। अम्नोन की माँ यिज्रेल की अहीनोअम
थी। **3**दूसरा पुत्र किलाब था। किलाब की माँ कर्मेल के
नाबाल की विधवा अबीगैल थी। तीसरा पुत्र अबशालोम
था। अबशालोम की माँ गशूर के राजा तल्मैं की पुत्री
माका थी। **4**चौथा पुत्र अदोनिय्याह था। अदोनिय्याह की
माँ हग्गीत थी। पाँचवा पुत्र शपत्याह था। शपत्याह की
माँ अबीतल थी। **5**छठा पुत्र यित्राम था। यित्राम की माँ
दाऊद की पत्नी एग्ला थी। दाऊद के ये छ: पुत्र हेब्रोन में
उत्पन्न हुए।

अब्नेर दाऊद से मिल जाने का निर्णय करता है

6जिस समय शाऊल परिवार तथा दाऊद परिवार में
युद्ध चल रहा था, अब्नेर ने अपने को शाऊल की सेना
में शक्तिशाली बना लिया। **7**शाऊल की दासी रिस्पा नाम
की थी। रिस्पा अय्या की पुत्री थी। ईशबोशेत ने अब्नेर
से कहा, "तुम मेरे पिता की दासी के साथ शारीरिक
सम्बन्ध क्यों करते हो?"

8अब्नेर, ईशबोशेत ने जो कुछ कहा, उस से बहुत
क्रोधित हुआ। अब्नेर ने कहा, "मैं शाऊल और उसके
परिवार का भक्त रहा हूँ। मैंने तुम को दाऊद को नहीं
दिया, मैंने तुमको उसे हराने नहीं दिया। मैं यहूदा के
लिये काम करने वाला देशद्रोही नहीं हूँ।* किन्तु अब
तुम कह रहे हो कि मैंने यह बुराई की। **9-10**मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि अब परमेश्वर ने जो कहा है वही होगा।
यहोवा ने कहा कि वह शाऊल के परिवार के राज्य

शाऊल के ... रहा यहूदा का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था। वे उन दूसरे परिवार समूहों के साथ युद्ध करते थे, जो शाऊल का अनुसरण करते थे।

मैं .... नहीं हूँ शाब्दिक "क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूं?

को ले लेगा और इसे दाऊद को देगा। यहोवा दाऊद को
यहूदा और इस्राएल का राजा बनायेगा। वह दान से
लेकर बेर्शेबा तक शासन करेगा। परमेश्वर मेरे साथ
बुरा करे यदि मैं वैसा होने में सहायता नहीं करता।”
11ईशबोशेत अब्नेर से कुछ भी नहीं कह सका।
ईशबोशेत उससे बहुत अधिक भयभीत था।
12अब्नेर ने दाऊद के पास दूत भेजे। अब्नेर ने कहा,
“तुम इस देश पर शासन करो। मेरे साथ एक सन्धि
करो और मैं तुमको पूरे इस्राएल के लोगों का शासक
बनने में सहायता करूँगा।”
13दाऊद ने उत्तर दिया, “ठीक है! मैं तुम्हारे साथ
सन्धि करूँगा। किन्तु तुमसे मैं केवल एक बात कहता
हूँ कि जब तुम मुझसे मिलने आओ तब शाऊल की
पुत्री मीकल को अवश्य लाना।”

दाऊद अपनी पत्नी मीकल को वापस पाता है

14दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूत
भेजे। दाऊद ने कहा, “मेरी पत्नी मीकल को मुझे वापस
करो। मैंने उसे पाने के लिये सौ पलिश्तियों को मारा
था।”*
15तब ईशबोशेत ने उन लोगों से कहा कि वह लैश के
पुत्र पलतीएल नामक व्यक्ति के पास से मीकल को ले
आए। **16**मीकल का पति पलतीएल मीकल के साथ
गया। वह बहूरीम नगर तक मीकल के पीछे–पीछे रोता
हुआ गया। किन्तु अब्नेर ने पलतीएल से कहा, “घर
लौट जाओ।” इसलिये पलतीएल घर लौट गया।

अब्नेर दाऊद की सहायता की प्रतिज्ञा करता है

17अब्नेर ने इस्राएल के प्रमुखों को यह सन्देश भेजा।
उसने कहा, “आप लोग दाऊद को अपना राजा बनाने
के इच्छुक थे। **18**अब इसे करें! यहोवा दाऊद के बारे में
कह रहा था जब उसने कहा था, ‘मैं अपने इस्राएली
लोगों को पलिश्तियों और उनके अन्य सभी शत्रुओं से
बचाऊँगा। मैं यह अपने सेवक दाऊद द्वारा करूँगा।’”
19अब्नेर ने ये बाते बिन्यामीन के परिवार समूह के
लोगों से कही। अब्नेर ने जो कुछ कहा वह बिन्यामीन
परिवार के लोगों तथा इस्राएल के सभी लोगों को अच्छा
लगा। अत: अब्नेर ने हेब्रोन में दाऊद से वे सभी बातें
बतायी, जिसे करने में इस्राएल के लोग तथा बिन्यामीन
परिवार के लोग सहमत थे।
20जब अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन आया। वह अपने
साथ बीस लोगों का लाया। दाऊद ने अब्नेर को और
उसके साथ आए सभी लोगों को दावत दी।
21अब्नेर ने दाऊद से कहा, “स्वामी, मेरे राजा, मैं
जाऊँगा और सभी इस्राएलियों को आपके पास लाऊँगा।
तब वे आपके साथ सन्धि करेंगे, और आप पूरे इस्राएल
पर शासन करेंगे जैसा आप चाहते हैं।”
तब दाऊद ने अब्नेर को विदा किया और अब्नेर
शान्तिपूर्वक गया।

अब्नेर की मृत्यु

22योआब और दाऊद के अधिकारी युद्ध से लौटकर
आए। उनके पास बहुत कीमती सामान थे जो वे शत्रु से
लाए थे। दाऊद ने अब्नेर को शान्तिपूर्वक जाने दिया
था। इसलिए अब्नेर दाऊद के साथ हेब्रोन में नहीं था।
23योआब और उसकी सारी सेना हेब्रोन पहुँची। सेना ने
योआब से कहा कि, “नेर का पुत्र अब्नेर राजा दाऊद
के पास आया था और दाऊद ने उसे शान्तिपूर्वक जाने
दिया।”
24योआब राजा के पास आया और कहा, “यह आपने
क्या किया? अब्नेर आपके पास आया और आपने उसे
बिना चोट पहुँचाये जाने दिया। क्यों? **25**आप नेर के पुत्र
अब्नेर को जानते हैं। वह आपके साथ चाल चलने
आया। वह उन सभी बातों का पता करने आया था जो
आप कर रहे हैं।”
26योआब ने दाऊद को छोड़ा और सीरा के कुँएं पर
अब्नेर के पास दूत भेजे। दूत अब्नेर को वापस लाये।
किन्तु दाऊद को इसका पता न चला। **27**जब अब्नेर
हेब्रोन आया तो योआब, प्रवेशद्वार के एक किनारे उसे
ले गया और तब योआब न अब्नेन के पेट में प्रहार
किया और अब्नेर मर गया। पिछले दिनों में अब्नेर ने
योआब केभाई असाहेल को मारा था। अत: अब योआब
ने अब्नेर को मारा डाला।

दाऊद अब्नेर के लिये रोता है

28बाद मे दाऊद ने यह समाचार सुना। दाऊद ने कहा,
“मैं और मेरा राज्य नेर के पुत्र अब्नेर की मृत्यु के
लिये निरपराध है। यहोवा इसे जानता है। **29**योआब और
उसका परिवार इसके लिये उत्तरदायी है और उसका
पूरा परिवार इसके लिए दोषी है। मुझे आशंका है कि
योआब के परिवार पर बहुत विपत्तियाँ आएंगी। मुझे यह
आशा है कि उसके परिवार में सदा कोई न कोई जख्म
से अथवा भयानक चर्मरोग से पीड़ित होगा, और कोई
बैसाखी उपयोग में लाएगा, और कोई युद्ध में मारा
जाएगा और कोई बिना भोजन रहेगा!”
30योआब और उसके भाई अबीशै ने अब्नेर को मार
डाला क्योंकि अब्नेर ने उसके भाई असाहेल को गिबोन
की लड़ाई में मारा था।
31-32दाऊद ने योआब के साथ के सभी व्यक्तियों से
कहा, “अपने वस्त्रों को फाड़ो और शोक वस्त्रों पहनो।
अब्नेर के लिये रोओ।” उन्होंने अब्नेर को हेब्रोन में
दफनाया। दाऊद अंत्येष्टि में दाऊद अर्थी के पीछे गया।

मैने .... मारा था शाब्दिक, “मैने उसके लिये सौ पलिश्तियों के खलडियों में दिया था।”

राजा दाऊद और सभी लोग अब्नेर की कब्र पर रोए।
33दाऊद ने अब्नेर के लिये अपना शोक–गीत गाया:

“क्या अब्नेर को किसी मूर्ख की तरह मरता
था?
34अब्नेर, तुम्हारे हाथ बंधे नहीं थे। तुम्हारे पैर
जंजीरों में कसे नहीं थे। नहीं अब्नेर, तुम्हें दुष्टों ने
मरा!”

तब सभी लोग फिर अब्नेर के लिये रोये। 35सभी
लोग दाऊद को दिन रहते भोजन करने के लिये प्रेरित
करने आए। किन्तु दाऊद ने विशेष प्रतिज्ञा की। उसने
कहा, “परमेश्वर मुझे दण्ड दे और मेरे कष्टों को बढ़ाएं
यदि मैं सूरज डूबने के पहले रोटी या कोई अन्य भोजन
करूँ।” 36जो कुछ हुआ सभी लोगों ने देखा और वे उन
सभी कामों से सहमत हुए जो राजा दाऊद कर रहा था।
37उस दिन यहूदा के लोगों और सभी इस्राएलियों ने
समझ लिया कि राजा दाऊद वह व्यक्ति नहीं जिसने नेर
के पुत्र अब्नेर को मारा।

38राजा दाऊद ने अपने सेवकों से कहा, “तुम लोग
जानते हो कि आज इस्राएल में एक बहुत महत्वपूर्ण
व्यक्ति मर गया है। 39ये उसी दिन हुआ जिस दिन मेरा
अभिषेक राजा के रूप में हुआ था किन्तु सरूयाह के
पुत्र मुझसे अधिक उग्र हैं। यहोवा इन व्यक्तियों को
अवश्य दण्ड दे।”

शाऊल के परिवार में परेशानियाँ आती हैं

4 शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) ने सुना कि अब्नेर
की मृत्यु हेब्रोन में हो गई। ईशबोशेत और उसके
सभी लोग बहुत अधिक भयभीत हो गये। 2दो आदमी
शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) को देखने गये। ये दोनों
आदमी सेना के सेनापति थे। एक व्यक्ति का नाम बाना
था और दूसरे का नाम रेकाब था। बाना और रेकाब
बेरोत के रिम्मोन के पुत्र थे। (वे बिन्यामीन परिवार
समूह के थे। बेरोत नगर बिन्यामीन परिवार समूह का
था। 3बेरोत के लोग गित्तैम को भाग गए और वे आज
तक वहाँ रहते हैं।)

4शाऊल के पुत्र योनातन का एक पुत्र मपीबोशेत था
जो लंगड़ा था। योनातन का पुत्र उस समय पाँच वर्ष का
था, जब यह सूचना मिली थी कि शाऊल और योनातन
यिज्रेल में मारे गए। इस पुत्र की धायी ने इस बच्चे को
उठाया और वह भाग गई। किन्तु जब धायी ने भागने में
जल्दी की तो योनातन का पुत्र उसकी बाँहों से गिर
पड़ा। यही कारण था कि योनातन का पुत्र लंगड़ा हो
गया था। इस पुत्र का नाम मपीबोशेत है।

5बेरोत के रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बाना दोपहर
को ईशबोशेत के महल में घुसे। ईशबोशेत गर्मी के
कारण आराम कर रहा था। 6-7रेकाब और बाना
महल के बीच में इस प्रकार आये मानों वे कुछ गेहूँ लेने
जा रहे हों। ईशबोशेत अपने बिस्तर में अपने शयनकक्ष
में लेटा हुआ था। रेकाब और बाना ने आघात किया
और ईशबोशेत को मार डाला। तब उन्होंने उसका सिर
काटा और उसे अपने साथ ले गये। वे यरदन घाटी से
होकर रात भर चलते रहे। 8वे हेब्रोन पहुँचे, और उन्होंने
ईशबोशेत का सिर दाऊद को दिया।

रेकाब और बाना ने राजा दाऊद से कहा, “यह आपके
शत्रु शाऊल के पुत्र ईशबोशेत का सिर है। उसने आपको
मारने का प्रयत्न किया। यहोवा ने शाऊल और उसके
परिवार को आपके लिये आज दण्ड दिया है।”

9दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बाना को उत्तर
दिया, दाऊद ने कहा, “निश्चय ही, यहोवा शाश्वत है,
उसने मुझे सभी आपत्तियों से बचाया है। 10किन्तु एक
व्यक्ति ने यह सोचा था कि वह मेरे लिये अच्छी खबर
लायेगा। उसने मुझसे कहा, ‘देखो! शाऊल मर गया।’
उसने सोचा था कि मैं उसे इस खबर को लाने के
कारण पुरस्कार दूँगा। किन्तु मैंने उस व्यक्ति को पकड़ा
और सिकलग में मार डाला। 11इसलिये मैं तुम लोगों को
मारना चाहूँगा और तुमको धरती से हटाऊँगा क्योंकि
दुष्ट व्यक्तियों ने एक अच्छे व्यक्ति को अपने घर के
शयनकक्ष में बिस्तर पर आराम करते समय मार डाला।”

12दाऊद ने युवकों को आदेश दिया कि वे रेकाब
और बाना को मार डालें। तब युवकों ने रेकाब और
बाना के हाथ–पैर काट डाले और हेब्रोन के चश्मे के
सहारे लटका कर मार डाला। तब उन्होंने ईशबोशेत के
सिर को लिया और उसी स्थान पर उसे दफनाया जिस
स्थान पर हेब्रोन में अब्नेर को दफनाया गया था।

इस्राएली दाऊद को राजा बनाते हैं

5 तब इस्राएल के सारे परिवार समूहों के लोग दाऊद
के पास हेब्रोन में आए। उन्होंने दाऊद से कहा,
“देखो हम सब एक परिवार * के हैं! 2बीते समय में जब
शाऊल हमारा राजा था तो वे आप ही थे जो इस्राएल के
लिये युद्ध में हमारा नेतृत्व करते थे और आप इस्राएल
को युद्धों से वापस लाये। यहोवा ने आपसे कहा, ‘तुम
मेरे लोग अर्थात् इस्राएलियों के गड़ेंरिया होगे। तुम इस्राएल
के शासक होगे।’”

3इस्राएल के सभी प्रमुख, राजा दाऊद के पास, हेब्रोन
में आए। राजा दाऊद ने यहोवा के सामने, हेब्रोन में, इन
प्रमुखों के साथ एक सन्धि की। तब प्रमुखों ने इस्राएल
के राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया।

4दाऊद उस समय तीस वर्ष का था जब उसने शासन
करना आरम्भ किया। उसने चालीस वर्ष शासन किया।

एक परिवार शाब्दिक “आपके रक्त–माँस।”

5उसने हेब्रोन में यहूदा पर सात वर्ष, छ: महीने तक शासन किया और उसने, सारे इस्राएल और यहूदा पर यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक शासन किया।

दाऊद यरूशलेम नगर को जीतता है

6राजा और उसके लोग यरूशलेम में यबूसियों के विरुद्ध गए। यबूसी वे लोग थे जो उस प्रदेश में रहते थे। यबूसियों ने दाऊद से कहा, "तुम हमारे नगर में नहीं आ सकते।* यहाँ तक कि अन्धे और लंगडे भी तुमको रोक सकते हैं।" (वे ऐसा इसलिये कह रहे थे क्योंकि वे सोचते थे की दाऊद उनके नगर में प्रवेश करने की क्षमता नहीं रखता। 7किन्तु दाऊद ने सिय्योन का किला ले लिया। यह किला दाऊद–नगर बना)

8उस दिन दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "यदि तुम लोग यबूसियों को हराना चाहते हो तो जलसुरंग* से जाओ, और उन 'अन्धे तथा अपाहिज' शत्रुओं पर हमला करो।" यही कारण है कि लोग कहते हैं "अन्धे और विकलांग उपासना गृह में नहीं आ सकते।"

9दाऊद किले में रहता था और इसे "दाऊद का नगर" कहता था। दाऊद ने उस क्षेत्र को बनाया और मिल्लो नाम दिया। उसने नगर के भीतर अन्य भवन भी बनाये। 10दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा उसके साथ था।

11सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूतों को भेजा। हीराम ने देवदारू के पेड़, बढ़ई और राजमिस्त्री लोगों को भी भेजा। उन्होंने दाऊद के लिये एक महल बनाया। 12उस समय दाऊद जानता था कि यहोवा ने उसे सचमुच इस्राएल का राजा बनाया है, और दाऊद यह भी जानता था कि यहोवा ने उसके राज्य को परमेश्वर के लोगों, अर्थात् इस्राएलियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण बनाया है।

13दाऊद हेब्रोन से यरूशलेम चला गया। यरूशलेम में दाऊद ने और अधिक दासियों तथा पत्नियों को प्राप्त किया। दाऊद के कुछ दूसरे बच्चे भी यरूशलेम में हुए। 14यरूशलेम में उत्पन्न हुए दाऊद के पुत्रों के नाम ये हैं : शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, 15यिभार, एलीशू, नेपेग, यापी, 16एलीशामा, एल्यादा तथा एलीपेलेत।

दाऊद पलिश्तयों के विरुद्ध युद्ध में जाता है

17पलिश्तयों ने यह सुना कि इस्राएलियों ने दाऊद का अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में किया है तब सभी पलिश्ती दाऊद को मार डालने के लिये उसकी खोज करने निकले। किन्तु दाऊद को यह सूचना मिल गई। वह एक किले में चला गया। 18पलिश्ती आए और रपाईम की घाटी में उन्होंने अपना डेरा डाला।

19दाऊद ने बात करके यहोवा से पूछा, "क्या मुझे पलिश्तियों के विरुद्ध युद्ध में जाना चाहिये? क्या तू मुझे पलिश्तियों को हराने देगा?"

यहोवा ने दाऊद से कहा, "जाओं, क्योंकि मैं निश्चय ही, पलिश्तियों को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।"

20तब दाऊद बालपरासीम आया। वहाँ उसने पलिश्तियों को हराया। दाऊद ने कहा, "यहोवा ने मेरे सामने मेरे शत्रुओं की सेना को इस प्रकार दौड़ भगाया जैसे जल बांध को तोड़ कर बहता है।" यही कारण है कि दाऊद ने उस स्थान का नाम "बालपरासीम" रखा। 21पलिश्तियों ने बालपरासीम में अपनी देवमूर्तियों को पीछे छोड़ दिया। दाऊद और उसके लोगों ने उन देवमूर्तियों को वहाँ से हटा दिया।

22पलिश्ती फिर आये और रपाईम की घाटी में उन्होंने डेरा डाला।

23दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। इस समय यहोवा ने कहा, "वहाँ मत जाओ। उनके चारों ओर उनकी सेना के पीछे से जाओ। तूत वृक्षों के पास उन पर आक्रमण करो। 24तूत वृक्षों की चोटी से तुम पलिश्तियों के सामरिक प्रमाण की ध्वनि को सुनोगे। तब तुम्हें शीघ्रता करनी चाहिये, क्योंकि उस समय यहोवा जायेगा और तुम्हारे लिये पलिश्तियों को हरा देगा।"

25दाऊद ने वही किया जो करने के लिये यहोवा ने आदेश दिया था। उसने पलिश्तियों को हराया। उसने उनका पीछा लगातार गेबा से गेजेर तक किया।

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक यरूशलेम लाया गया

6 दाऊद ने फिर इस्राएल के सभी चुने तीस हजार लोगों को इकट्ठा किया। 2तब दाऊद और उसके सभी लोग यहूदा के बाले* में गये और परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को यहूदा के बाले से लेकर उसे यरूशलेम में ले आए। लोग पवित्र सन्दूक के पास यहोवा की उपासना करने के लिये जाते हैं। पवित्र सन्दूक यहोवा के सिंहासन की तरह है। पवित्र सन्दूक के ऊपर करूब की मूर्तियाँ है, और यहोवा इन स्वर्गदूतों पर राजा की तरह बैठता है। 3उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को एक नई गाड़ी में रखा। वे गिबियाह में स्थित अबीनादाब के घर से पवित्र सन्दूक को ले जा रहे थे। उज्जा और अहह्यो नई गाड़ी चला रहे थे।

4जब वे गिबियाह में अबीनादाब के घर से पवित्र सन्दूक ले जा रहे थे, तब उज्जा परमेश्वर के पवित्र

तुम ... नहीं आ सकते यरूशलेम का नगर पहाड़ी पर बसा था और नगर के चारों ओर ऊँची दीवार थी। अत: अधिकार करने में कठिनाई थी।

जल सुरंग वहाँ एक जल सुरंग थी जो भूमि में नीचे प्राचीन यरूशलेम नगर में जाती थी। दाऊद और उसके व्यक्तियों ने नगर में पहुंचने के लिये इस सुरंग का उपयोग किया।

यहुदा के बाला किर्यत्यारीम का अन्य नाम देखें 1 इति. 13:6

सन्दूक सहित गाड़ी में बैठा था। अहह्यो पवित्र सन्दूक
वाली गाड़ी के आगे आगे चल कर संचालन कर रहा
था। **5**दाऊद और सभी इस्राएली यहोवा के सामने पूरे
उत्साह के साथ नाच और गा रहे थे। ये संगीत वाद्य
सनौवर लकड़ी के बने थे। वे वीणा, सितार, ढोल झांझ,
और मंजीरा बजा रहे थे। **6**जब दाऊद के लोग नकोन
खलिहान में आये तो बैल लड़खड़ा पडे। परमेश्वर का
पवित्र सन्दूक बन्द गाड़ी से गिरने लगा। उज्जा ने पवित्र
सन्दूक को पकड़ लिया। **7**यहोवा उज्जा पर क्रोधित हुआ
और उसे मार डाला।* उज्जा ने पवित्र सन्दूक को
छूकर परमेश्वर के प्रति अश्रद्धा दिखाई। उज्जा वहाँ
परमेश्वर के पवित्र सन्दूक के बगल में मरा। **8**दाऊद
निराश हो गया क्योंकि यहोवा ने उज्जा को मार डाला
था। दाऊद ने उस स्थान को "पेरेसुज्जा" कहा।

9दाऊद उस दिन यहोवा से डर गया। दाऊद ने कहा,
"अब मैं यहोवा का पवित्र सन्दूक यहाँ कैसे ला सकता
हूँ?"

10इसलिये दाऊद यहोवा के पवित्र सन्दूक को दाऊद
नगर में नहीं ले जाना चाहता था। दाऊद ने पवित्र सन्दूक
को गत से आये हुये ओबेद-एदोम के घर में रखा।
दाऊद पवित्र सन्दूक को सड़क से गत के ओबेद-एदोम
के घर ले गया। **11**यहोवा का सन्दूक ओबेद-एदोम के
घर में तीन महीने तक रहा। यहोवा ने ओबेद-एदोमऔर
उसके सारे परिवार को आशीर्वाद दिया।

12लोगों ने दाऊद से कहा, "यहोवा ने ओबेद-एदोम के
परिवार और उसकी सारी चीजों को आशीर्वाद दिया
क्योंकि परमेश्वर का पवित्र सन्दूक वहाँ है।" इसलिये
दाऊद गया और ओबेद-एदोम के घर से परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक को दाऊद नगर से ले आया। दाऊद ने
इसे प्रसन्नता से किया। **13**जब यहोवा के पवित्र सन्दूक
को ले चलने वाले छ: कदम चले तो वे रुक गये और
दाऊद ने एक बैल तथा एक मोटे बछड़े की बलि भेंट
की। **14**तब दाऊद ने यहोवा के सामने पूरे उत्साह के
साथ नृत्य किया। दाऊद ने एपोद पहन रखा था।

15दाऊद और सभी इस्राएली यहोवा के पवित्र सन्दूक
को नगर लाते समय उल्लास से उद्घोष करने और
तुरही बजाने लगे। **16**शाऊल की पुत्री मीकल खिड़की
से देख रही थी। जब यहोवा का पवित्र सन्दूक नगर में
आया तो दाऊद यहोवा के सामने नाच–कूद कर रहा
था। मीकल ने यह देखा और वह दाऊद पर गुस्सा हो
गई। उसने सोचा कि वह अपने आप को मूर्ख सिद्ध
कर रहा है।

17दाऊद ने पवित्र सन्दूक के लिये एक तम्बू लगाया।
इस्राएलियों ने यहोवा के सन्दूक को तम्बू में उसकी
जगह पर रखा। तब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि
यहोवा को चढ़ाई।

18जब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाना पूरा
किया तब उसने सर्वशक्तिमान यहोवा के नाम पर लोगों
को आशीर्वाद दिया। **19**दाऊद ने रोटी, किशमिश का
टुकड़ा, और खजूर की रोटी का हिस्सा इस्राएल के हर
एक स्त्री–पुरुष को दिया। तब सभी लोग अपने घर गये।

मीकल दाऊद को डाँटती है

20दाऊद अपने घर में आशीर्वाद देने गया। किन्तु
शाऊल की पुत्री मीकल उससे मिलने निकल आई।
मीकल ने कहा, "आज इस्राएल के राजा ने अपना ही
सम्मान नहीं किया। तुमने अपनी प्रजा की दासियों के
सामने अपने वस्त्र उतार दिये। तुम उस मूर्ख की तरह थे
जो बिना लज्जा के अपने वस्त्र उतारता है!"

21तब दाऊद ने मीकल से कहा, "यहोवा ने मुझे चुना
है, न कि तुम्हारे पिता और उसके परिवार के किसी
व्यक्ति ने। यहोवा ने मुझे इस्राएल के अपने लोगों का
मार्ग दर्शक बनने के लिये चुना। यही कारण है कि मैं
यहोवा के सामने उत्सव मनाऊँगा और नृत्य करूँगा।
22संभव है, मैं तुम्हारी दृष्टि में अपना सम्मान खो दूँ।
संभव है मैं तुम्हारी निगाह में ही कुछ गिर जाऊँ। किन्तु
जिन लड़कियों के बारे में तुम बात करती हो वे मेरा
सम्मान करती हैं।"

23शाऊल की पुत्री को कभी सन्तान न हुई। वह बिना
सन्तान के मरी।

दाऊद एक उपासना गृह बनाना चाहता है

7 जब राजा दाऊद अपने नये घर गया। यहोवा ने
उसके चारों ओर के शत्रुओं से उसे शान्ति दी।
2राजा दाऊद ने नातान नबी से कहा, "देखो, मैं देवदारू
की लकड़ी से बने महल में रह रहा हूँ। किन्तु परमेश्वर
का पवित्र सन्दूक अब भी तम्बू में रखा हुआ है।"

3नातान ने राजा दाऊद से कहा, "जाओ, और जो
कुछ तुम करना चाहते हो, करो। यहोवा तुम्हारे साथ
होगा। **4**किन्तु उसी रात नातान को यहोवा का सन्देश
मिला। **5**यहोवा ने कहा, "जाओ, और मेरे सेवक दाऊद
से कहो, 'यहोवा यह कहता है: तुम वह व्यक्ति नहीं हो
जो मेरे रहने के लिये एक गृह बनाये। **6**मैं उस समय
गृह में नहीं रहता था जब मैं इस्राएलियों को मिस्र से
बाहर लाया। नहीं, मैं उस समय से चारों ओर तम्बू में
यात्रा करता रहा। मैंने तम्बू का उपयोग अपने घर के
रूप में किया। **7**मैंने इस्राएल के किसी भी परिवार समूह
से देवदारू की लकड़ी का सुन्दर घर अपने लिए बनाने
के लिए नहीं कहा।'

8"तुम्हें मेरे सेवक दाऊद से यह कहना चाहिये:
सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, 'मैं तुम्हें चरागाह से

यहोवा ... मार डाला केवल लेविवंशी परमेश्वर की पवित्र सन्दूक या पवित्र तम्बू से कोई उपासना गृह–सामग्री ले जा सकते थे। उज्जा लेविवंशी नहीं था। देखें गिनती 1:50

लाया। मैंने तुम्हें तब अपनाया जब तुम भेंड़े चरा रहे थे।
मैंने तुमको अपने लोग इस्राएलियों का मार्ग दर्शक
चुना। 9मैं तुम्हारे साथ तुम जहाँ कहीं गए रहा । मैंने
तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे लिये पराजित किया। मैं तुम्हें
पृथ्वी महान व्यक्तियों में से एक बनाऊँगा 10–11और मैं
अपने लोग इस्राएलियों के लिये एक स्थान चुनूँगा। मैं
इस्राएलियों को इस प्रकार जमाऊँगा कि वे अपनी भूमि
पर रह सकें। तब वे फिर कभी हटाये नहीं जा सकेंगे।
अतीत में मैंने अपने इस्राएल के लोगों को मार्गदर्शन के
लिये न्यायाधीशों को भेजा था और पापी व्यक्तियों ने
उन्हें परेशान किया। अब वैसा नहीं होगा। मैं तुम्हें
तुम्हारे सभी शत्रुओं से शान्ति दूँगा। मैं तुमसे यह भी
कहता हूँ कि मैं तुम्हारे परिवार को राजाओं का परिवार
बनाऊँगा।*

12"'तुम्हारी उम्र समाप्त होगी और तुम अपने पूर्वजों
के साथ दफनाये जाओगे। उस समय मैं तुम्हारे पुत्रों में
से एक को राजा बनाऊँगा। 13वह मेरे नाम पर मेरा
एक गृह (मन्दिर) बनवायेगा। मैं उसके राज्य को सदा
के लिये शक्तिशाली बनाऊँगा। 14मैं उसका पिता बनूँगा
और वह मेरा पुत्र होगा। जब वह पाप करेगा, मैं उसे
दण्ड देने के लिये अन्य लोगों का उपयोग करूँगा। उसे
दंडित करने के लिये वे मेरे सचेतक होंगे। 15किन्तु मैं
उससे प्रेम करना बन्द नहीं करूँगा। मैं उस पर कृपालु
बना रहूँगा। मैंने अपने प्रेम और अपनी कृपा शाऊल से
हटा ली। मैंने शाऊल को हटा दिया, जब मैं तुम्हारी
ओर मुड़ा। मैं तुम्हारे परिवार के साथ वही नहीं करूँगा।
16तुम्हारे राजाओ का परिवार सदा चलता रहेगा तुम
उस पर निर्भर रह सकते हों तुम्हाला राज्य तुम्हारे लिये
सदा चलता रहेगा। तुम्हारा सिहांसन (राज्य) सदैव बना
रहेगा।'"

17नातान ने दाऊद को हर एक बात बताई। उसने
दाऊद से हर एक बात कही जो उसने दर्शन में सुनी।

दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है

18तब राजा दाऊद भीतर गया और यहोवा के सामने
बैठ गया। दाऊद ने कहा, "यहोवा, मेरे स्वामी, मैं तेरे
लिये इतना महत्वपूर्ण क्यों हूँ? मेरा परिवार महत्वपूर्ण
क्यों है? तूने मुझे महत्वपूर्ण क्यों बना दिया। 19मैं तेरे
सेवक के अतिरिक्त और कुछ नहीं हूँ, और तू मुझ पर
इतना अधिक कृपालु रहा है। किन्तु तूने ये कृपायें मेरे
भविष्य के परिवार के लिये भी करने को कहा है।
यहोवा मेरे स्वामी, तू सदा लोगों के लिये ऐसी ही बातें
नहीं कहता, क्या तू कहता है? 20मैं तुझसे और अधिक,
क्या कह सकता हूँ? यहोवा, मेरे स्वामी, तू जानता है
कि मैं केवल तेरा सेवक हूँ। 21तूने ये अद्भुत कार्य
इसलिये किया है क्योंकि तूने कहा है कि तू इनको
करेगा और क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिसे तू करना
चाहता है, और तूने निश्चय किया है कि मैं इन बड़े
कार्यों को जानूँ। 22हे यहोवा! मेरे स्वामी यही कारण है
कि तू महान है! तेरे समान कोई नहीं है। तेरी तरह
कोई देवता नहीं है। हम यह जानते हैं क्योंकि हम लोगों
ने स्वयं यह सब सुना है। उन कार्यों के बारे में जो तूने
किये।

23"तेरे इस्राएल के लोगों की तरह पृथ्वी पर कोई
राष्ट्र नहीं है। ये विशेष लोग हैं। वे दास थे। किन्तु तूने
उन्हें मिस्र से निकाला और उन्हें स्वतन्त्र किया। तूने
उन्हें अपने लोग बनाया। तूने इस्राएलियों के लिये महान
और अद्भुत काम किये। तूने अपने देश के लिये
आश्चर्यजनक काम किये। 24तूने इस्राएल के लोगों को
सदा के लिये अपने लोग बनाया, और यहोवा तू उनका
परमेश्वर हुआ।

25"यहोवा परमेश्वर, तूने अभी, मेरे बारे में बाते कीं।
मैं तेरा सेवक हूँ। तूने मेरे परिवार के बारे में भी बातें
कीं। अपने वचनों को सदा सत्य कर जो तूने करने की
प्रतिज्ञा की है। मेरे परिवार को राजाओं का परिवार
हमेशा के लिये बना। 26तब तेरा नाम सदा सम्मानित
रहेगा, और लोग कहेंगे, 'सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर
इस्राएल पर शासन करता है और होने दे कि तेरे सेवक
दाऊद का परिवार तेरे सामने सदा चलता रहे।'

27"सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, तूने
मुझे बहुत कुछ दिखाया है। तूने कहा, 'मैं तुम्हारे परिवार
को महान बनाऊँगा।' यही कारण है कि मैं तेरे सेवक
ने, तेरे प्रति यह प्रार्थना करने का निश्चय किया।
28यहोवा मेरे स्वामी, तू परमेश्वर है और तेरे कथन
सत्य होते है और तूने इस अपने सेवक के लिये, यह
अच्छी चीज का वचन दिया है। 29कृपया मेरे परिवार
को आशीष दे। हे यहोवा! हे स्वामी! जिससे वह तेरे
सम्मुख सदैव बना रहे। तूने ये ही वचन दिया था। अपने
आशीर्वाद से मेरे परिवार को सदा के लिये आशीष दे।"

दाऊद अनेक युद्ध जीतता है

8 बाद में दाऊद ने पलिश्तियों को हराया। उसने
उनकी राजधानी पर अधिकार कर लिया। 2दाऊद
ने मोआब के लोगों को भी हराया। उसने उन्हें भूमि पर
लेटने को विवश किया। तब उसने एक रस्सी का
उपयोग उन्हें नापने के लिये किया। जब दो व्यक्ति नाप
लिये तब दाऊद ने उनको आदेश दिया कि वे मारे
जायेंगे। किन्तु हर एक तीसरा व्यक्ति जीवित रहने दिया
गया। मोआब के लोग दाऊद के सेवक बन गए। उन्होंने
उसे राजस्व दिया।

3रहोब का पुत्र हददेजेर, सोबा का राजा था। दाऊद ने
हददेजेर को उस समय पराजित किया जब उसने महानद

तुम्हारे ... बनाऊँगा शाब्दिक "तुम्हारे लिये एक खानदान
बनाऊँगा।

के पास के क्षेत्र पर अधिकार करने का प्रयत्न किया।
4दाऊद ने हददेजेर से सत्रह सौ घुड़सवार सैनिक लिये।
उसने बीस हजार पैदल सैनिक भी लिये। दाऊद ने एक
सौ के अतिरिक्त, सभी रथ के अश्वों को लंगड़ा कर
दिया। उसने इन सौ अश्व रथों को बचा लिया।

5दमिश्क से अरामी लोग सोबा के राजा हददेजेर की
सहायता के लिये आए। किन्तु दाऊद ने उन बाईस
हजार अरामियों को पराजित किया। **6**तब दाऊद ने
दमिश्क के अराम में सेना की टुकड़ियाँ रखी। अरामी
दाऊद के सेवक बन गए और राजस्व लाए। यहोवा ने
दाऊद को, जहाँ कहीं वह गया विजय दी।

7दाऊद ने उन सोने की ढालों को लिया जो हददेजेर
के सैनिकों की थीं। दाऊद ने इन ढालों को लिया और
उनको यरूशलेम लाया। **8**दाऊद ने तांबे की बनी बहुत
सी चीजें बेतह और बरौते से भी लीं। (बेतह और बरौते
दोनों नगर हददेजेर के थे।)

9हमात के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेजेर
की पूरी सेना को पराजित कर दिया। **10**तब तोई ने
अपने पुत्र योराम को दाऊद के पास भेजा। योराम ने
दाऊद का अभिवादन किया और आशीर्वाद दिया क्योंकि
दाऊद ने हददेजेर के विरुद्ध युद्ध किया और उसे पराजित
किया था। (हददेजेर ने, तोई से, पहले युद्ध किये थे।)
योराम चाँदी, सोने और ताँबे की बनी चीजें लाया।
11दाऊद ने इन चीजों को लिया और यहोवा को समर्पित
कर दिया। उसने उसे अन्य सोने–चाँदी के साथ रखा
जिसे उसने पराजित राष्ट्रों से लेकर यहोवा को समर्पित
किया था। **12**ये राष्ट्र अराम, मोआब, अम्मोन , पलिश्ती
और अमालेक थे। दाऊद ने सोबा के राजा रेहोब के
पुत्र हददेजेर को भी पराजित किया।

13दाऊद ने अट्ठारह हजार अरामियों को नमक की
घाटी में पराजित किया। वह उस समय प्रसिद्ध था जब
वह घर लौटा। **14**दाऊद ने एदोम में सेना की टुकड़ियाँ
रखी। उसने इन सैनिकों की टुकड़ियों को एदोम के पूरे
देश में रखा। एदोम के सभी लोग दाऊद के सेवक हो
गए। जहाँ कहीं दाऊद गया यहोवा ने उसे विजय दी।

दाऊद का शासन

15दाऊद ने सारे इस्राएल पर शासन किया। दाऊद के
निर्णय सभी लोगों के लिये महत्वपूर्ण और उचित होते
थे। **16**सरूयाह का पुत्र योआब सेना का सेनापति था।
अहीलूद का पुत्र इतिहासकार था। **17**अहीतूब का पुत्र
सादोक और एब्यातर का पुत्र अहीमेलेक दोनों याजक
थे। सरायाह सचिव था। **18**यहोयादा का पुत्र बनायाह
करेतियों और पलेतियों* का शासक था, और दाऊद
के पुत्र महत्वपूर्ण प्रमुख थे।

करेतियों और पलेतियों ये दाऊद के विशेष अंगरक्षक थे। एक प्राचीन अर्मेई अनुवाद में "धनुर्धर और पत्थर फेंक है।

दाऊद शाऊल के परिवार पर कृपालु है

9 दाऊद ने पूछा, "क्या शाऊल के परिवार में अब
तक कोई बचा है? मैं योनातन के कारण उस
व्यक्ति पर दया करना चाहता हूँ।"

2शाऊल के परिवार से एक सेवक सीबा नाम का
था। दाऊद के सेवकों ने सीबा को दाऊद के पास
बुलाया। राजा दाऊद ने पूछा, "क्या तुम सीबा हो?"

सीबा ने कहा, "हाँ मैं सीबा, आपका सेवक हूँ।"

3राजा ने पूछा, "क्या शाऊल के परिवार में कोई बचा
है? मैं उस व्यक्ति पर परमेश्वर की कृपा दिखाना
चाहता हूँ।"

सीबा ने राजा दाऊद से कहा, "योनातन का एक पुत्र
अभी तक जीवित है? वह दोनों पैरों से लंगड़ा है।"

4राजा ने सीबा से कहा, "यह पुत्र कहाँ है?"

सीबा ने राजा से कहा, "वह लो-दोबार में अम्मीएल
के पुत्र माकीर के घरन में है।"

5दाऊद ने अपने सेवकों को लो-दोबार के अम्मीएल
के पुत्र माकीर के घर से योनातन के पुत्र को लाने को
कहा। **6**योनातन का पुत्र मेपीबोशेत दाऊद के पास
आया और अपना सिर भूमि तक झुकाया।

दाऊद ने कहा, "मेपीबोशेत।"

मेपीबोशेत ने कहा, मैं आपका सेवक हूँ।"

7दाऊद ने मेपीबोशेत से कहा, "डरो नहीं। मैं तुम्हारे
प्रति दयालु रहूँगा। मैं यह तुम्हारे पिता योनातन के लिये
करूँगा। मैं तुम्हारे पितामह शाऊल की सारी भूमि
तुमको दूँगा, और तुम सदा मेरी मेज पर भोजन कर
सकोगे।"

8मेपीबोशेत दाऊद के सामने फिर झुका। मेपीबोशेत
ने कहा, "आप अपने सेवक पर बहुत कृपालु रहे हैं
और मैं एक मृत कुत्ते से अधिक अच्छा नहीं हूँ।"

9तब राजा दाऊद ने शाऊल के सेवक सीबा को
बुलाया। दाऊद ने सीबा से कहा, "मैंने शाऊल के परिवार
और जो कुछ उसका है उसे तुम्हारे स्वामी के पौत्र
(मेपीबोशेत) को दे दिया है। **10**तुम मेपीबोशेत के लिये
भूमि पर खेती करोगे। तुम्हारे पुत्र और सेवक मेपीबोशेत
के लिये यह करेंगे। तुम फसल काटोगे। तब तुम्हारे
स्वामी का पौत्र (मेपीबोशेत) खाने के लिये भोजन पाएगा।
किन्तु मेपीबोशेत तुम्हारे स्वामी का पौत्र मेरी मेज पर
खाने का सदा अधिकारी होगा।"

सीबा के पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे। **11**सीबा ने
राजा दाऊद से कहा, "मै आपका सेवक हूँ। मैं वह सब
कुछ करूँगा, जो मेरे स्वामी, मेरे राजा आदेश देंगे।"

अत: मेपीबोशेत ने दाऊद की मेज पर राजा के पुत्रों में
से एक की तरह भोजन किया। **12**मेपीबोशेत का एक
छोटा पुत्र मीका नाम का था। सीबा परिवार के सभी
लोग मेपीबोशेत के सेवक हो गए। **13**मेपीबोशेत दोनों
पैरो से लंगड़ा था। मेपीबोशेत यरूशलेम में रहता था।

हर एक दिन मेपीबोशेत राजा की मेज पर भोजन करता
था।

हानून दाऊद के व्यक्तियों को लज्जित करता है

10 बाद में, अम्मोनियों का राजा नाहाश मरा।
उसके बाद उसका पुत्र हानून राजा हुआ। 2दाऊद
ने कहा, "नाहाश मेरे प्रति कृपालु रहा। इसलिये मैं
उसके पुत्र हानून के प्रति कृपालु रहूँगा।" इसलिये दाऊद
ने हानून को उसके पिता की मृत्यु पर सांत्वना देने के
लिये अपने अधिकारियों को भेजा। अत: दाऊद के
सेवक अम्मोनियों के देश में गये। 3किन्तु अम्मोनी
प्रमुखों ने अपने स्वामी हानून से कहा, "क्या आप
समझते हैं कि दाऊद कुछ व्यक्तियों को आपके पास
सांत्वना देने के लिये भेजकर आपके पिता को सम्मान
देने का प्रयत्न कर रहा है? नहीं! दाऊद ने इन व्यक्तियो
को आपके नगर के बारे मे गुप्त रूप से जानने और
समझने के लिये भेजा है। वे आपके विरुद्ध युद्ध की
योजना बना रहे हैं।"

4इसलिये हानून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और
उनकी आधी दाढ़ी कटवा दी। उसने उनके वस्त्रों को
बीच से कमर के नीचे तक कटवा दिया। तब उसने
उन्हें भेज दिया।

5जब लोगों ने दाऊद से कहा, तो उसने अपने
अधिकारियों से मिलने के लिये दूतों को भेजा। उसने
यह इसलिये किया क्योंकि ये लोग बहुत लज्जित थे।
राजा दाऊद ने कहा, "जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ फिर से
न बढ़े तब तक यरीहो में ठहरो। तब यरूशलेम लौट
आओ।"

अम्मोनियों के विरुद्ध युद्ध

6अम्मोनियों ने समझ लिया कि वे दाऊद के शत्रु हो
गये। इसलिये उन्होंने अरामी को बेत्रहोब और सोबा से
पारिश्रमिक पर बुलाया। वहाँ बीस हजार अरामी
पैदल-सैनिक आए थे। अम्मोनियों ने तोब से बारह
हजार सैनिकों और माका के राजा को एक हजार
सैनिकों के साथ पारिश्रमिक पर बुलाया।

7दाऊद ने इस विषय में सुना। इसलिये उसने योआब
और शक्तिशाली व्यक्तियों की सारी सेना भेजी। 8अम्मोनी
बाहर निकले और युद्ध के लिये तैयार हुए। वे नगर द्वार
पर खड़े हुए। योआब और रहोब के अरामी तथा तोब
और माका के व्यक्ति स्वयं खुले मैदान में नहीं खड़े हुये।

9योआब ने देखा कि अम्मोनी उसके विरुद्ध सामने
और पीछे दोनों ओर खड़े हैं। इसलिये उसने इस्राएलियों
में से कुछ उत्तम योद्धाओं को चुना। योआब ने इन उत्तम
सैनिकों को अरामियों के विरुद्ध लड़ने को तैयार किया।
10तब योआब ने अन्य लोगों को अपने भाई अबीशै के
नेतृत्व में अम्मोनी के विरुद्ध भेजा। 11योआब ने अबीशै
से कहा, "यदि अरामी हमसे अधिक शक्तिशाली हों तो
तुम मेरी सहायता करना। यदि अम्मोनी तुमसे अधिक
शक्तिशाली होगी तो मैं आकर तुम्हे सहायता दूँगा। 12वीर
बनो, और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के
नगर के लिये वीरता से युद्ध करेंगे। यहोवा वही करेगा
जिसे वह ठीक मानता है।"

13तब योआब और उसके सैनिकों ने अरामियों पर
आक्रमण किया। अरामी योआब और उसके सैनिकों
के सामने भाग खड़े हुए। 14अम्मोनियों ने देखा कि
अरामी भाग रहे हैं, इसलिये वे अबीशै के सामने से भाग
खड़े हुए और अपने नगर में लौट गए।

इस प्रकार योआब अम्मोनियों के साथ युद्ध से लौटा
और यरूशलेम वापस आया।

अरामी फिर लड़ने का निश्चय करते हैं

15अरामियों ने देखा कि इस्राएलियों ने उन्हें हरा दिया।
इसलिये वे एक विशाल सेना के रूप में इकट्ठे हुए।
16हददेजेर ने परात नदी की दूसरी ओर रहने वाले
अरामियों को लाने के लिये दूत भेजे। ये अरामी हेलाम
पहुँचे। उनका संचालक शोबक था, जो हददेजेर की
सेना का सेनापति था।

17दाऊद को इसका पता लगा। इसलिये उसने सारे
इस्राएलियों को एक साथ इकट्ठा किया उन्होंने यरदन
नदी को पार किया और वे हेलाम पहुँचे।

वहाँ अरामियों ने आक्रमण की तैयारी की और धावा
बोल दिया। 18किन्तु दाऊद ने अरामियों को पराजित
किया और वे इस्राएलियों के सामने भाग खड़े हुए।
दाऊद ने बहुत से अरामियों को मार डाला। सात सौ
सारथी तथा चालीस हजार घुड़सवार दाऊद ने अरामी
सेना के सेनापति शोबक को भी मार डाला।

19जो राजा, हददेजेर की सेवा कर रहे थे उन्होंने देखा
कि इस्राएलियों ने उनको हरा दिया। इसलिये उन्होंने
इस्राएलियों से सन्धि की और उनकी सेवा करने लगे।
अरामी अम्मोनियों को फिर सहायता देने से भयभीत
रहने लगे।

दाऊद बतशेबा से मिलता है

11 बसन्त में, जब राजा युद्ध पर निकलते हैं, दाऊद
ने योआब, उसके अधिकारियों और सभी
इस्राएलियों को अम्मोनियों को नष्ट करने के लिये
भेजा। योआब की सेना ने रब्बा (राजधानी) पर भी
आक्रमण किया।

किन्तु दाऊद यरूशलेम में रुका। 2शाम को वह अपने
बिस्तर से उठा। वह राजमहल की छत पर चारों ओर
घूमा। जब दाऊद छत पर था, उसने एक स्त्री को नहाते
देखा। स्त्री बहुत सुन्दर थी। 3इसलिये दाऊद ने अपने
सेवकों को बुलाया और उनसे पूछा कि वह स्त्री कौन

थी? एक सेवक ने उत्तर दिया, "वह स्त्री एलीआम की
पुत्री बतशेबा है। वह हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी है।"
4दाऊद ने बतशेबा को अपने पास बुलाने के लिये दूत
भेजे। जब वह दाऊद के पास आई तो उसने उसके साथ
शारीरिक सम्बन्ध किया। उसने स्नान किया और वह
अपने घर चली गई। 5किन्तु बतशेबा गर्भवती हो गई।
उसने दाऊद को सूचना भेजी। उसने उससे कहा, "मैं
गर्भवती हूँ।"

दाऊद अपने पाप को छिपाना चाहता है

6दाऊद ने योआब को सन्देश भेजा, "हित्ती ऊरिय्याह
को मेरे पास भेजो।"
इसलिये योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेजा।
7ऊरिय्याह दाऊद के पास आया। दाऊद ने ऊरिय्याह से
बात की। दाऊद ने ऊरिय्याह से पूछा कि योआब कैसा
है, सैनिक कैसे हैं और युद्ध कैसे चल रहा है। 8तब
दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "घर जाओ और आराम
करो।"
ऊरिय्याह ने राजा का महल छोड़ा। राजा ने ऊरिय्याह
को एक भेंट भी भेजी। 9किन्तु ऊरिय्याह अपने घर
नहीं गया। ऊरिय्याह राजा के महल के बाहर द्वार पर
सोया। वह उसी प्रकार सोया जैसे राजा के अन्य सेवक
सोये। 10सेवकों ने दाऊद से कहा, "उरिय्याह अपने घर
नहीं गया।"
तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "तुम लम्बी यात्रा से
आए। तुम घर क्यों नहीं गए?"
11ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, "पवित्र सन्दूक तथा
इस्राएल और यहूदा के सैनिक डेरों में ठहरे हैं। मेरे
स्वामी योआब और मेरे स्वामी (दाऊद) के सेवक
बाहर मैदानों में खेमा डाले पड़े हैं। इसलिये यह अच्छा
नहीं कि मैं घर जाऊँ, खाऊँ, पीऊँ, और अपनी पत्नी
के साथ सोऊँ।"
12दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "आज यहीं ठहरो।
कल मैं तुम्हें युद्ध में वापस भेजूँगा।"
ऊरिय्याह उस दिन यरूशलेम में ठहरा। वह अगली
सुबह तक रुका। 13तब दाऊद ने उसे आने और खाने
के लिये बुलाया। ऊरिय्याह ने दाऊद के साथ पीया और
खाया। दाऊद ने उरिय्याह को नशे में कर दिया। किन्तु
ऊरिय्याह, फिर भी घर नहीं गया। उस शाम को ऊरिय्याह
राजा के सेवकों के साथ राजा के द्वार के बाहर सोया।

दाऊद ऊरिय्याह की मृत्यु की योजना बनाता है

14अगले प्रात:काल, दाऊद ने योआब के लिये एक
पत्र लिखा। दाऊद ने ऊरिय्याह को वह पत्र ले जाने को
दिया। 15पत्र में दाऊद ने लिखा: "ऊरिय्याह को अग्रिम
पंक्ति में रखो जहाँ युद्ध भयंकर हो। तब उसे अकेले
छोड़ दो और उसे युद्ध में मारे जाने दो।"
16योआब ने नगर के घेरे बन्दी के समय यह देखा कि
सबसे अधिक वीर अम्मोनी योद्धा कहाँ है। उसने
ऊरिय्याह को उस स्थान पर जाने के लिये चुना। 17नगर
(रब्बा) के आदमी योआब के विरुद्ध लड़ने को आये।
दाऊद के कुछ सैनिक मारे गये। हित्ती ऊरिय्याह उन
लोगों में से एक था।
18तब योआब ने दाऊद को युद्ध में जो हुआ, उसकी
सूचना भेजी। 19योआब ने दूत से कहा कि वह राजा
दाऊद से कहे कि युद्ध में क्या हुआ। 20"सम्भव है कि
राजा क्रुद्ध हो। संभव है कि राजा पूछे, 'योआब की सेना
नगर के पास लड़ने क्यों गई? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि
लोग नगर के प्राचीर से भी बाण चला सकते हैं? 21क्या
तुम नहीं जानते कि यरूब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को
किसने मारा? वहाँ एक स्त्री नगर-दीवार पर थी जिसने
अबीमेलेक के ऊपर चक्की का ऊपरी पाट फेंका।
उस स्त्री ने उसे तेबेस में मारा डाला। तुम दीवार के
निकट क्यों गये?' (यदि राजा दाऊद यह पूछता है) तो
तुम्हें उत्तर देना चाहिये 'आपका सेवक हित्ती ऊरिय्याह
भी मर गया।'"
22दूत गया और उसने दाऊद को वह सब बताया जो
उसे योआब ने कहने को कहा था। 23दूत ने दाऊद से
कहा, "अम्मोन के लोग जीत रहे थे वे बाहर आये तथा
उन्होंने खुले मैदान में हम पर आक्रमण किया। किन्तु
हम लोग उनसे नगर-द्वार पर लड़े। 24नगर दीवार के
सैनिकों ने आपके सेवकों पर बाण चलाये। आपके
कुछ सेवक मारे गए। आपका सेवक हित्ती ऊरिय्याह
भी मारा गया।"
25दाऊद ने दूत से कहा, "तुम्हें योआब से यह कहना
है: 'इस परिणाम से परेशान न हो। हर युद्ध में कुछ लोग
मारे जाते हैं यह किसी को नहीं मालूम कि कौन मारा
जायेगा। रब्बा नगर पर भीषण आक्रमण करो। तब तुम
उस नगर को नष्ट करोगे।' योआब को इन शब्दों से
प्रोत्साहित करो।"

दाऊद बतशेबा से विवाह करता है

26बतशेबा ने सुना कि उसका पति ऊरिय्याह मर
गया। तब वह अपने पति के लिये रोई। 27जब उसने
शोक का समय पूरा कर लिया, तब दाऊद ने उसे
अपने घर में लाने के लिये सेवकों को भेजा। वह दाऊद
की पत्नी हो गई, और उसने दाऊद के लिये एक पुत्र
उत्पन्न किया। दाऊद ने जो बुरा काम किया यहोवा ने
उसे पसन्द नहीं किया।

नातान दाऊद से बात करता है

12 यहोवा ने नातान को दाऊद के पास भेजा।
नातान दाऊद के पास गया। नातान ने कहा,
"नगर में दो व्यक्ति थे। एक व्यक्ति धनी था। किन्तु

दूसरा गरीब था। **2**धनी आदमी के पास बहुत अधिक
भेड़ें और पशु थे। **3**किन्तु गरीब आदमी के पास, एक
छोटे मादा मेमने के अतिरिक्त जिसे उसने खरीदा था,
कुछ न था। गरीब आदमी उस मेमने को खिलाता था।
यह मेमना उस गरीब आदमी के भोजन में से खाता था
और उसके प्याले में से पानी पीता था। मेमना गरीब
आदमी की छाती से लग कर सोता था। मेमना उस
व्यक्ति की पुत्री के समान था।

4"तब एक यात्री धनी व्यक्ति से मिलने के लिये वहाँ
आया। धनी व्यक्ति यात्री को भोजन देना चाहता था।
किन्तु धनी व्यक्ति अपनी भेड़ या अपने पशुओं में से
किसी को यात्री को खिलाने के लिये नहीं लेना चाहता
था। उस धनी व्यक्ति ने उस गरीब से उसका मेमना ले
लिया। धनी व्यक्ति ने उसके मेमने को मार डाला और
अपने अतिथि के लिये उसे पकाया।"

5दाऊद धनी आदमी पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने
नातान से कहा, "यहोवा शाश्वत है, निश्चय जिस व्यक्ति
ने यह किया वह मरेगा। **6**उसे मेमने की चौगुनी कीमत
चुकानी पड़ेगी क्योंकि उसने यह भयानक कार्य किया
और उसमें दया नहीं थी।"

नातान, दाऊद को उसके पाप के बारे में बताता है

7तब नातान ने दाऊद से कहा, "तुम वो धनी पुरुष
हो! यहोवा इस्राएल का परमेश्वर यह कहता है: 'मैंने
तुम्हारा अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में किया।
मैंने तुम्हे शाऊल से बचाया। **8**मैंने उसका परिवार और
उसकी पत्नियाँ तुम्हें लेने दीं, और मैंने तुम्हें इस्राएल
और यहूदा का राजा बनाया। जैसे वह पर्याप्त नहीं हो,
मैंने तुम्हें अधिक से अधिक दिया। **9**फिर तुमने यहोवा
के आदेश की उपेक्षा क्यों की? तुमने वह क्यों किया
जिसे वह पाप कहता है। तुमने हित्ती ऊरिय्याह को
तलवार से मारा और तुमने उसकी पत्नी को अपनी
पत्नी बनाने के लिये लिया। हाँ, तुमने ऊरिय्याह को
अम्मोनियों की तलवार से मार डाला। **10**इसलिये सदैव
तुम्हारे परिवार में कुछ लोग ऐसे होगें जो तलवार से
मारे जायेगें। तुमने ऊरिय्याह हित्ती की पत्नी ली। इस
प्रकार तुमने यह प्रकट किया कि तुम मेरी परवाह नहीं
करते।'

11"यही है जो यहोवा कहता है: 'मैं तुम्हारे विरुद्ध
आपत्तियाँ ला रहा हूँ। यह आपत्ति तुम्हारे अपने परिवार
से आएंगी। मैं तुम्हारी पत्नियों को ले लूँगा और उसे दूँगा
जो तुम्हारे बहुत अधिक समीप है। यह व्यक्ति तुम्हारी
पत्नियों के साथ सोएगा और इसे हर एक जानेगा।
12तुम बतशेबा के साथ गुप्त रूप में सोये। किन्तु मैं यह
करूँगा जिससे इस्राएल के सारे लोग इसे देख सकें।'"

13तब दाऊद ने नातान से कहा, "मैंने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया है।"

नातान ने दाऊद से कहा, "यहोवा तुम्हें क्षमा कर
देगा, यहाँ तक की इस पाप के लिये भी तुम मरोगे नहीं।
14किन्तु इस पाप को जो तुमने किया है उससे यहोवा
के शत्रुओ ने यहोवा का सम्मान करना छोड़ दिया है।
अत: इस कारण जो तुम्हारा पुत्र उत्पन्न हुआ है, मर
जाएगा।"

दाऊद और बतशेबा का बच्चा मर जाता है

15तब नातान अपने घर गया और यहोवा ने दाऊद
और ऊरिय्याह की पत्नी से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था
उसे बहुत बीमार कर दिया। **16**दाऊद ने बच्चे के लिये
परमेश्वर से प्रार्थना की। दाऊद ने खाना-पीना बन्द
कर दिया। वह अपने घर में गया और उसमें ठहरा
रहा। वह रातभर भूमि पर लेटा रहा।

17दाऊद के परिवार के प्रमुख आये और उन्होंने उसे
भूमि से उठाने का प्रयत्न किया। किन्तु दाऊद ने उठना
अस्वीकार किया। उसने इन प्रमुखों के साथ खाना
खाने से भी इन्कार कर दिया।

18सातवें दिन बच्चा मर गया। दाऊद के सेवक दाऊद
से यह कहने से डरते थे कि बच्चा मर गया। उन्होंने
कहा, "देखो, हम लोगों ने दाऊद से उस समय बात
करने का प्रयत्न किया जब बच्चा जीवित था। किन्तु
उसने हम लोगों की बात सुनने से इन्कार कर दिया।
यदि हम दाऊद से कहेंगे कि बच्चा मर गया तो हो
सकता है वह अपने को कुछ हानि कर ले।"

19किन्तु दाऊद ने अपने सेवकों को कानाफूसी करते
देखा। तब उसने समझ लिया कि बच्चा मर गया। इसलिये
दाऊद ने अपने सेवकों से पूछा, "क्या बच्चा मर गया?"

सेवको ने उत्तर दिया, "हाँ वह मर गया।"

20दाऊद फर्श से उठा। वह नहाया। उसने अपने वस्त्र
बदले और तैयार हुआ। तब वह यहोवा के गृह में
उपासना करने गया। तब वह घर गया और कुछ खाने
को माँगा। उसके सेवकों ने उसे कुछ खाना दिया और
उसने खाया।

21दाऊद के नौकरों ने उससे कहा, "आप यह क्यों
कर रहे हैं? जब बच्चा जीवित था तब आपने खाने से
इन्कार किया। आप रोये। किन्तु जब बच्चा मर गया तब
आप उठे और आपने भोजन किया।"

22दाऊद ने कहा, "जब बच्चा जीवित रहा, मैंने भोजन
करना अस्वीकार किया, और मैं रोया क्योंकि मैंने
सोचा, 'कौन जानता है, संभव है यहोवा मेरे लिये दु:खी
हों और बच्चे को जीवित रहने दें।' **23**किन्तु अब बच्चा
मर गया। इसलिये मैं अब खाने से क्यों इन्कार करूँ?
क्या मैं बच्चे को फिर जीवित कर सकता हूँ? नहीं!
किसी दिन मैं उसके पास जाऊँगा, किन्तु वह मेरे पास
लौटकर नहीं आ सकता।"

सुलैमान उत्पन्न होता है

24तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को सान्त्वना दी।
वह उसके साथ सोया और उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध
किया। बतशेबा फिर गर्भवती हुई। उसका दूसरा पुत्र
हुआ। दाऊद ने उस लड़के का नाम सुलैमान रखा।
यहोवा सुलैमान से प्रेम करता था। **25**यहोवा ने नबी
नातान द्वारा सन्देश भेजा। नातान ने सुलैमान का नाम
यदीद्याह रखा। नातान ने यह यहोवा के लिये किया।

दाऊद रब्बा पर अधिकार करता है

26रब्बा नगर अम्मोनियों का राजधानी था। योआब
रब्बा के विरुद्ध में लड़ा। उसने नगर को ले लिया।
27योआब ने दाऊद के पास दूत भेजा और कहा, "मैंने
रब्बा के विरुद्ध युद्ध किया है। मैंने जल के नगर को
जीत लिया है। **28**अब अन्य लोगों को साथ लायें और
इस नगर (रब्बा) पर आक्रमण करें। इस नगर पर
अधिकार कर लो, इसके पहले की मैं इस पर अधिकार
करूँ। यदि इस नगर पर मैं अधिकार करता हूँ तो उस
नगर का नाम मेरे नाम पर होगा।"

29तब दाऊद ने सभी लोगों को इकट्ठा किया और
रब्बा को गया। वह रब्बा के विरुद्ध लड़ा और नगर पर
उसने अधिकार कर लिया। **30**दाऊद ने उनके राजा के
सिर से मुकुट उतार दिया।* मुकुट सोने का था और
वह तौल में लगभग पचहत्तर पौंड था। इस मुकुट में
बहुमूल्य रत्न थे। उन्होंने मुकुट को दाऊद के सिर पर
रखा। दाऊद नगर से बहुत सी कीमती चीजें ले गया।

31दाऊद रब्बा नगर से भी लोगों को बाहर लाया।
दाऊद ने उन्हें आरे, लोहे की गैती और कुल्हाड़ियों से
काम करवाया। उसने उन्हें ईटों से निर्माण करने के
लिये भी विवश किया। दाऊद ने वही व्यवहार सभी
अम्मोनी नगरों के साथ किया। तब दाऊद और उसकी
सारी सेना यरूशलेम लौट गई।

अम्मोन और तामार

13 दाऊद का एक पुत्र अबशालोम था। अबशालोम
की बहन का नाम तामार था। तामार बहुत
सुन्दर थी। दाऊद के अन्य पुत्रों में से एक पुत्र अम्नोन
था **2**जो तामार से प्रेम करता था। तामार कुवाँरी थी।
अम्नोन उसके साथ कुछ बुरा करन को नहीं सोचता
था। लेकिन अम्नोन उस बहुत चाहता था। अम्नोन उस
के बाहे मे इतना सोचन लगा कि वह बिमार हो गया।

3अम्नोन का एक मित्र शिमा का पुत्र योनादाब था।
(शिमा दाऊद का भाई था।) योनादाब बहुत चालाक
आदमी था। **4**योनादाब ने अम्नोन से कहा, "हर दिन
तुम दुबले–दुबले से दिखाई पड़ते हो! 'तुम राजा के पुत्र
हो! तुम्हें खाने के लिये बहुत अधिक है, तो भी तुम
अपना वजन क्यों खोते जा रहे हो? मुझे बताओ!"

अम्नोन ने योनादाब से कहा, "मैं तामार से प्रेम करता
हूँ। किन्तु वह मेरे सौतेले भाई अबशालोम की बहन
है।"

5योनादाब ने अम्नोन से कहा, "बिस्तर में लेट जाओ।
ऐसा व्यवहार करो कि तुम बीमार हो। तब तुम्हारे पिता
तुमको देखने आएंगे। उनसे कहो, 'कृपया मेरी बहन
तामार को आने दें और मुझे खाना देने दें। उसे मेरे
सामने भोजन बनाने दें। तब मैं उसे देखूँगा और उसके
हाथ से खाऊँगा।'"

6इसलिये अम्नोन बिस्तर में लेट गया, और ऐसा व्यवहार
किया मानों वह बीमार हो। राजा दाऊद अम्नोन को
देखने आया। अम्नोन ने राजा दाऊद से कहा, "कृपया
मेरी बहन तामार को यहाँ आने दें। मेरे देखते हुए उसे
मेरे लिये दो रोटी बनाने दें। तब मैं उसके हाथों से खा
सकता हूँ।"

7दाऊद ने तामार के घर सन्देशवाहको को भेजा।
संदेशवाहकों ने तामार से कहा, "अपने भाई
अम्नोन के घर जाओ और उसके लिये कुछ भोजन
पकाओ।"

तामार अम्नोन के लिये भोजन बनाती है

8अत: तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई। अम्नोन
बिस्तर में था। तामार ने कुछ गूंधा आटा लिया और इसे
अपने हाथों से एक साथ दबाया। उसने अम्नोन के
देखते हुये कुछ रोटियाँ बनाई। तब उसने रोटियों को
पकाया। **9**जब तामार ने रोटियाँ को पकाना पूरा किया
तो उसने कढ़ाही में से रोटियों को अम्नोन के लिये
निकाला। किन्तु अम्नोन ने खाना अस्वीकार किया।

अम्नोन ने अपने सेवकों से कहा, "तुम सभी लोग
चले जाओ। मुझे अकला रहते दो!" इसलिये सभी सेवक
अम्नोन के कमरे से बाहर चले गए।

10अम्नोन ने तामार से कहा, "भोजन भीतर वाले
कमरे में ले चलो। तब मैं तुम्हारे हाथ से खाऊँगा।"

अम्नोन तामार के साथ कुकर्म करता है

तामार अपने भाई के पास भीतर वाले कमरे में गई।
वह उन रोटियों को लाई जो उसने बनाए थे। **11**वह
अम्नोन के पास गई जिससे वह उसके हाथों से खा
सके। किन्तु अम्नोन ने तामार को पकड़ लिया। उसने
उससे कहा, "बहन, आओ, और मेरे साथ सोओ।"

12तामार ने अम्नोन से कहा, "नहीं, भाई! मुझे मजबूर
न करो! यह इस्राएल में कभी नहीं किया जा सकता।
यह लज्जाजनक काम न करो। **13**मैं इस लज्जा से कभी
उबर नहीं सकती! तुम उन मूर्ख इस्राएलियों की तरह

दाऊद ... उतार दिया या "मिल्कम के सिर से" मिल्कम एक असत्य देवता था, जिसकी पूजा अम्मोनी लोग करते थे।

मत बनों कृपया राजा से बात करो। वह तुम्हें मेरे साथ
विवाह करने देगा।"

14किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। वह
तामार से अधिक शक्तिशाली था। उसने उसे शारीरिक
सम्बन्ध करने के लिये विवश किया। 15उसके बाद
अम्नोन तामार से घृणा करने लगा। अम्नोन ने उसके
साथ उससे भी अधिक घृणा की जितना वह पहले प्रेम
करता था। अम्नोन ने तामार से कहा, "उठो और चली
जाओ!"

16तामार ने अम्नोन से कहा, "अब मुझे अपने से दूर
कर, तुम पहले से भी बड़ा पाप करने जा रहे हो!"

किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। 17अम्नोन
ने अपने युवक सेवक से कहा, "इस लड़की को इस
कमरे से अभी बाहर निकालो। उसके जाने पर दरवाजे
में ताला लगा दो।"

18अत: अम्नोन का सेवक तामार को कमरे के
बाहर ले गया और उसके जाने पर ताला लगा दिया।

तामार ने कई रंग का लबादा पहन रखा था। राजा
की कुवाँरी कन्यायें ऐसा ही लबादा पहनती थीं।
19तामार ने राख ली और अपने सिर पर डाल लिया।
उसने अपने बहुरंगे लबादे को फाड़ डाला। उसने
अपना हाथ अपने सिर पर रख लिया और वह जोर से
रोने लगी।

20तामार के भाई अबशालोम ने तामार से कहा, "तो
क्या तुम्हारे भाई अम्नोन ने तुम्हारे साथ सोया। अम्नोन
तुम्हारा भाई है। बहन, अब शान्त रहो। इससे तुम बहुत
परेशान न हो।" अत: तामार ने कुछ भी नहीं कहा। वह
अबशालोम के घर रहने चली गई *

21राजा दाऊद को इसकी सूचना मिली। वह बहुत
क्रोधित हुआ। 22अबशालोम अम्नोन से घृणा करता
था। अबशालोम ने अच्छा या बुरा अम्नोन से कुछ नहीं
कहा । वह अम्नोन से घृणा करता था क्योंकि अम्नोन
ने उसकी बहन के साथ कुकर्म किया था।

अबशालोम का बदला

23दो वर्ष बाद कुछ व्यक्ति एप्रैम के पास बाल्हासोर में
अबशालोम की भेड़ों का ऊन काटने आये। अबशालोम
ने राजा के सभी पुत्रों को आने और देखने के लिये
आमन्त्रित किया। 24अबशालोम राजा के पास गया और
उससे कहा, "मेरे पास कुछ व्यक्ति मेरी भेड़ों से ऊन
काटने आ रहे हैं। कृपया अपने सेवकों के साथ आएँ
और देखें।"

25राजा दाऊद ने अबशालोम से कहा, "पुत्र नहीं। हम
सभी नहीं जाएँगे। इससे तुम्हें परेशानी होगी।" अबशालोम
ने दाऊद से चलने की प्रार्थना की। दाऊद नहीं गया,
किन्तु उसने आशीर्वाद दिया।

26अबशालोम ने कहा, "यदि आप जाना नहीं चाहते
तो, कृपाकर मेरे भाई अम्नोन को मेरे साथ जाने दे।"
राजा दाऊद ने अबशालोम से पूछा, "वह तुम्हारे साथ
क्यों जाये?"

27अबशालोम दाऊद से प्रार्थना करता रहा। अन्त में
दाऊद ने अम्नोन और सभी राजपुत्रों को अबशालोम
के साथ जाने दिया।

अम्नोन की हत्या की गई

28तब अबशालोम ने अपने सेवकों को आदेश दिया।
उसने उनसे कहा, "अम्नोन पर नजर रखो। जब वह
नशे में धुत होगा तब मैं तुम्हें आदेश दूँगा अम्नोन को
जान से मार डालो। सजा पाने से डरो नहीं। आखिकार,
तुम मेरे आदेश का पालन करोगे। अब शक्तिशाली
और वीर बनों।"

29अबशालोम के युवकों ने अबशालोम के आदेश के
अनुसार अम्नोन को मार डाला। किन्तु दाऊद के अन्य
पुत्र बच निकले। हर एक पुत्र अपने खच्चर पर बैठा
और भाग गया।

दाऊद अम्नोन की मृत्यु की सूचना पाता है

30जब राजा के पुत्र मार्ग में थे, दाऊद को सूचना
मिली। सूचना यह थी, "अबशालोम ने राजा के सभी
पुत्रों को मार डाला है! कोई भी पुत्र बचा नहीं है।"

31राजा दाऊद ने अपने वस्त्र फाड़ डाले और धरती
पर लेट गया। दाऊद के पास खड़े उसके सभी सेवकों ने
भी अपने वस्त्र फाड़ डाले।

32किन्तु शिमा (दाऊद के भाई) के पुत्र योनादाब ने
दाऊद से कहा, "ऐसा मत सोचो कि राजा के सभी
युवक पुत्र मार डाले गए है। नहीं, यह केवल अम्नोन है
जो मारा गया हैं। जब से अम्नोन ने उसकी बहन तामार
के साथ कुकर्म किया था तभी से अबशालोम ने यह
योजना बनाई थी। 33मेरे स्वामी राजा यह न सोचें कि
सभी राजपुत्र मारे गए हैं। केवल अम्नोन ही मारा
गया।"

34अबशालोम भाग गया। एक रक्षक नगर-प्राचीर
पर खड़ा था। उसने पहाड़ी की दूसरी ओर से कई
व्यक्तियों को आते देखा। 35इसलिये योनादाब ने राजा
दाऊद से कहा, "देखो, मैं बिल्कुल सही था। राजा के
पुत्र आ रहें हैं।"

36जब योनादाब ने ये बातें कही तभी राजपुत्र आ गए।
वे जोर-जोर से रो रहे थे। दाऊद और उसके सभी
सेवक रोने लगे। वे सभी बहुत विलाप कर रहे थे।
37दाऊद अपने पुत्र (अम्नोन) के लिये बहुत दिनों तक
रोया।

वह ... गई या "तामार एक बरबाद स्त्री जो अपने भाई
अबशालोम के घर रहती थी।"

अबशालोम गशूर को भाग गया*

अबशालोम गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के
पास भाग गया। 38अबशालोम के गशूर भाग जाने के
बाद, वह वहाँ तीन वर्ष तक ठहरा। 39अम्नोन की मृत्यु
के बाद दाऊद शान्त हो गया। लेकिन अभशालोम उसे
बहुत याद आता था।

योआब एक बुद्धिमती स्त्री को दाऊद के पास भेजता है

14 सरूयाह का पुत्र योआब जानता था कि राजा
दाऊद अबशालोम के बारे में सोच रहा है।
2इसलिये योआब ने तकोआ का एक दूत वहाँ से एक
बुद्धिमती स्त्री को लाने के लिये भेजा। योआब ने इस
बुद्धिमती स्त्री से कहा, "कृपया बहुत अधिक शोकग्रस्त
होने का दिखावा करो। शोक-वस्त्र पहन लो, तेल न
लगाओ। वैसी स्त्री का व्यवहार करो जो किसी मृत के
लिये कई दिन से रो रही है। 3राजा के पास जाओ और
जो मैं कहता हूँ, उन्हीं शब्दों का उपयोग करते हुए
उनसे बातें करो।" तब योआब ने उस बुद्धिमती स्त्री को
क्या कहना है, यह बता दिया।

4तब तकोआ की उस स्त्री ने राजा से बातें कीं। वह
फर्श पर गिर पड़ी उसका ललाट फर्श पर जा टिका।
वह झुकी और बोली, "राजा, मुझे सहायता दे!"

5राजा दाऊद ने उससे कहा, "तुम्हारी समस्या क्या
है?"

उस स्त्री ने कहा, "मैं विधवा हूँ। मेरा पति मर चुका
है। 6मेरे दो पुत्र थे। ये दोनों पुत्र बाहर मैदानों में लड़े।
उन्हें कोई रोकने वाला न था। एक पुत्र ने दूसरे पुत्र को
मार डाला। 7अब सारा परिवार मेरे विरुद्ध है। वे मुझसे
कहते थे, 'उस पुत्र को लाओ जिसने अपने भाई को
मार डाला। तब हम उसे मार डालेंगे, क्योंकि उसने
अपने भाई को मार डाला था।' इस प्रकार उसके
उत्तराधिकारी से छुटकारा मिल सकता है। मेरा पुत्र
अग्नि की आखिरी चिनगारी की तरह होगा, और वह
अन्तिम चिनगारी जलेगी और बुझ जाएगी। तब मेरे मृत
पति का नाम और उसकी सम्पत्ति इस धरती से मिट
जायेगी। 8तब राजा ने स्त्री से कहा, "घर जाओ। मैं स्वयं
तुम्हारा मामला निपटाऊँगा।"

9तकोआ की स्त्री ने राजा से कहा, "हे राजा मेरे
स्वामी, दोष मुझ पर आने दें! किन्तु आप और आपका
राज्य निर्दोष है।"

10राजा दाऊद ने कहा, "उस व्यक्ति को लाओ जो
तुम्हें बुरा-भला कहता है। तब वह व्यक्ति तुम्हें फिर
परेशान नहीं करेगा। 11स्त्री ने कहा, "कृपया अपने
यहोवा परमेश्वर के नाम पर शपथ लें कि आप इन
लोगों को रोकेंगे। तब वे लोग जो हत्यारे को दण्ड देना
चाहते हैं मेरे पुत्र को दण्ड नहीं देंगे।"

दाऊद ने कहा, "यहोवा शाश्वत है, तुम्हारे पुत्र को
कोई व्यक्ति चोट नहीं पहुँचायेगा। तुम्हारे पुत्र का एक
बाल भी बाँका नहीं होगा।"

12उस स्त्री ने कहा, "मेरे स्वामी, राजा कृपया मुझे
आपसे कुछ कहने का अवसर दें।"

राजा ने कहा, "कहो"

13तब उस स्त्री ने कहा, "आपने परमेश्वर के लोगों
के विरुद्ध यह योजना क्यों बनाई है? हाँ, जब आप यह
कहते हैं आप यह प्रकट करते हैं कि आप अपराधी हैं।
क्यों? क्योंकि आप अपने पुत्र को वापस नहीं ला सके हैं
जिसे आपने घर छोड़ने को विवश किया था। 14यह
सही है कि हम सभी किसी दिन मरेंगे। हम लोग उस
पानी की तरह हैं जो भूमि पर फेंका गया है। कोई भी
व्यक्ति भूमि से उस पानी को इकट्ठा नहीं कर सकता।
किन्तु परमेश्वर माफ करता है। उसके पास उन लोगों
के लिए एक योजना है जो अपना घर छोड़ने को विवश
किये गए हैं -परमेश्वर उनको अपने से अलग नहीं
करता। 15मेरे प्रभु, राजा मैं यह बात कहने आपके पास
आई। क्यों? क्योंकि लोगों ने मुझे भयभीत किया। मैंने
अपने मन में कहा कि, 'मैं राजा से बात करूंगी। संभव
है राजा मेरी सुनेंगे। 16राजा मेरी सुनेंगे, और मेरी रक्षा
उस व्यक्ति से करेंगे जो मुझे और मेरे पुत्र दोनों को
मारना चाहते हैं और उन चीजों को प्राप्त करने से
रोकना चाहते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें दी है।' 17मैं
जानती हूँ कि मेरे राजा मेरे प्रभु के शब्द मुझे शान्ति
देंगे क्योंकि आप परमेश्वर के दूत के समान होंगे। आप
समझेंगे कि क्या अच्छा और क्या बुरा है। यहोवा आपका
परमेश्वर, आपके साथ होगा।"

18राजा दाऊद ने उस स्त्री को उत्तर दिया, "तुम्हें उस
प्रश्न का उत्तर देना चाहिये जिसे मैं तुमसे पूछूँगा"

उस स्त्री ने कहा, "मेरे प्रभु, राजा, कृपया अपना प्रश्न
पूछें।"

19राजा ने कहा, "क्या योआब ने ये सारी बातें तुमसे
कहने को कहा है?"

उस स्त्री ने जवाब दिया, मेरे प्रभु राजा, आपके जीवन
की शपथ, आप सही हैं। आपके सेवक योआब ने ये
बातें कहने के लिये कहा। 20योआब ने यह इसलिये
किया जिससे आप तथ्यों को दूसरी दृष्टि से देखेंगे। मेरे
प्रभु आप परमेश्वर के दूत के समान बुद्धिमान हैं। आप
सब कुछ जानते हैं जो पृथ्वी पर होता है।"

अबशालोम यरूशलेम लौटता है

21राजा ने योआब से कहा, "देखो, मैं वह करूँगा
जिसके लिये मैंने वचन दिया है। अब कृपया युवक
अबशालोम को वापस लाओ।"

अबशालोम ... गया तल्मै, अबशालोम का पितामह था। देखे 2शमू. 3:3

22योआब ने भूमि तक अपना माथा झुकाया। उसने
राजा दाऊद के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा,
“आज मैं समझता हूँ कि आप मुझ पर प्रसन्न हैं। मैं यह
समझता हूँ क्योंकि आपने वही किया जो मेरी माँग थी।”
23तब योआब उठा और गशूर गया तथा अबशालोम
को यरूशलेम लाया। 24किन्तु राजा दाऊद ने कहा,
“अबशालोम अपने घर को लौट सकता है। वह मुझसे
मिलने नहीं आ सकता।” इसलिये अबशालोम अपने घर
को लौट गया। अबशालोम राजा से मिलने नहीं जा
सका।
25अबशालोम की अत्याधिक प्रशंसा उसके सुन्दर
रूप के लिये थी। इस्राएल में कोई व्यक्ति इतना सुन्दर
नहीं था जितना अबशालोम। अबशालोम के सिर से पैर
तक कोई दोष नहीं था। 26हर एक वर्ष के अन्त में
अबशालोम अपने सिर के बाल काटता था और उसे
तोलता था। बालों का तोल लगभग पाँच पौंड था।
27अबशालोम के तीन पुत्र थे और एक पुत्री। उस पुत्री
का नाम तामार था। तामार एक सुन्दर स्त्री थी।

अबशालोम योआब को अपने से मिलने के लिये विवश करता है

28अबशालोम पूरे दो वर्ष तक, दाऊद से मिलने की
स्वीकृति के बिना, यरूशलेम में रहा। 29अबशालोम ने
योआब के पास दूत भेजे। इन दूतों ने योआब से कहा
कि तुम अबशालोम को राजा के पास भेजो। किन्तु
योआब अबशालोम से मिलने नहीं आया। अबशालोम ने
दूसरी बार सन्देश भेजा। किन्तु योआब ने फिर भी
आना अस्वीकार किया।
30तब अबशालोम ने अपने सेवकों से कहा, “देखो,
योआब का खेत मेरे खेत से लगा है। उसके खेत में जौ
की फसल है। जाओ और जौ को जला दो।”
इसलिये अबशालोम के सेवक गए और योआब के
खेत में आग लगानी आरम्भ की। 31योआब उठा और
अबशालोम के घर आया। योआब ने अबशालोम से
कहा, “तुम्हारे सेवकों ने मेरा खेत को क्यों जलाया?”
32अबशालोम ने योआब से कहा, “मैंने तुमको सन्देश
भेजा। मैंने तुमसे यहाँ आने को कहा। मैं तुम्हें राजा के
पास भेजना चाहता था। मैं उससे पूछना चाहता था कि
उसने गशूर से मुझे घर क्यों बुलाया। मैं उससे मिल नहीं
सकता, अत: मेरे लिये गशूर में रहना कहीं अधिक
अच्छा था। अब मुझे राजा से मिलने दो। यदि मैंने पाप
किया है तो वह मुझे मार सकता है।”

अबशालोम दाऊद से मिलता है

33तब योआब राजा के पास आया और अबशालोम
का कहा हुआ सुनाया। राजा ने अबशालोम को बुलाया।
तब अबशालोम राजा के पास आया। अबशालोम ने
राजा के सामने भूमि पर माथा टेक कर प्रणाम किया,
और राजा ने अबशालोम का चुम्बन किया।

अबशालोम बहुत-से मित्र बनाता है

15 इसके बाद अबशालोम ने एक रथ और घोड़े
अपने लिए लिये। जब वह रथ चलाता था तो
अपने सामने पचास दौड़ते हुये व्यक्तियों को रखता था।
2अबशालोम सवेरे उठ जाता और द्वार* के निकट
खड़ा होता। यदि कोई व्यक्ति ऐसा होता जिसकी कोई
समस्या होती और न्याय के लिये राजा दाऊद के पास
आया होता तो अबशालोम उससे पूछता, “तुम किस
नगर के हो?” वह व्यक्ति उत्तर देता, “मैं अमुक हूँ और
इस्राएल के अमुक परिवार समूह का हूँ।” 3तब अबशालोम
उन व्यक्तियों से कहा करता, “देखो, जो तुम कह रहे हो
वह शुभ और उचित है किन्तु राजा दाऊद तुम्हारी एक
नहीं सुनेगा।”
4अबशालोम यह भी कहता, “काश! मैं चाहता हूँ कि
कोई मुझे इस देश का न्यायाधीश बनाता। तब मैं उन
व्यक्तियों में से हर एक की सहायता कर सकता जो
न्याय के लिये समस्या लेकर आते।”
5जब कोई व्यक्ति अबशालोम के पास आता और
उसके सामने प्रणाम करते को झुकता तो अबशालोम
आगे बढ़ता और उस व्यक्ति से हाथ मिलाता। तब वह
उस व्यक्ति का चुम्बन करता। 6अबशालोम ऐसा उन
सभी इस्राएलियों के साथ करता जो राजा दाऊद के पास
न्याय के लिये आते। इस प्रकार अबशालोम ने इस्राएल
के सभी लोगों का हृदय जीत लिया।

अबशालोम द्वारा दाऊद के राज्य को लेने की योजना

7चार वर्ष बाद अबशालोम ने राजा दाऊद से कहा,
“कृपया मुझे अपनी विशेष प्रतिज्ञा को पूरी करने जाने
दें जिसे मैंने हेब्रोन में यहोवा के सामने की थी। 8मैंने
यह प्रतिज्ञा तब की थी जब मैं गशूर अराम में रहता
था। मैंने कहा था, ‘यदि यहोवा मुझे यरूशलेम लौटायेगा
तो मैं यहोवा की सेवा करूँगा।’”
9राजा दाऊद ने कहा, “शान्तिपूर्वक जाओ।”
अबशालोम हेब्रोन गया। 10किन्तु अबशालोम ने इस्राएल
के सभी परिवार समूहो में जासूस भेजे। इन जासूसों ने
लोगों से कहा, “जब तुम तुरही की आवाज सुनो, तो
कहो कि ‘अबशालोम हेब्रोन में राजा हो गया।’”
11अबशालोम ने दो सौ व्यक्तियों को अपने साथ चलने
के लिये आमन्त्रित किया। वे व्यक्ति उसके साथ यरूशलेम
से बाहर गए। किन्तु वे यह नहीं जानते थे कि उसकी
योजना क्या है। 12अहीतोपेल दाऊद के सलाहकारों में

द्वार यह वह स्थान था जहाँ लोग अपने सब कार्य करने आते थे। इसी स्थान पर न्याय की अदालतें होती थी।

से एक था। अहीतोपेल गीलो नगर का निवासी था। जब
अबशालोम बलि-भेंटों को चढ़ा रहा था, उसने अहीतोपेल
को अपने गीलो नगर से आने के लिये कहा। अबशालोम
की योजना ठीक-ठीक चल रही थी और अधिक से
अधिक लोग उसका समर्थन करने लगे।

दाऊद को अबशालोम के योजना की सूचना

13एक व्यक्ति दाऊद को सूचना देने आया। उस व्यक्ति
ने कहा, "इस्राएल के लोग अबशालोम का अनुसरण
करना आरम्भ कर रहे हैं।"

14तब दाऊद ने यरूशलेम में रहने वाले अपने सभी
सेवकों से कहा, "हम लोगों को बच निकलना चाहिये!
यदि हम बच नहीं निकलते तो अबशालोम हम लोगों
को निकलने नहीं देगा। अबशालोम द्वारा पकड़े जाने के
पहले हम लोग शीघ्रता करें। नहीं तो वह हम सभी को
नष्ट कर देगा और वह यरूशलेम के लोगों को मार
डालेगा।"

15राजा के सेवकों ने राजा से कहा, "जो कुछ भी
आप कहेंगे, हम लोग करेंगे।"

दाऊद और उसके आदमी बच निकलते हैं

16राजा दाऊद अपने घर के सभी लोगों के साथ
बाहर निकल गया। राजा ने घर की देखभाल के लिये
अपनी दस पत्नियों को वहाँ छोड़ा। **17**राजा अपने सभी
लोगों को साथ लेकर बाहर निकला। वे नगर के अन्तिम
मकान पर रुके। **18**उसके सभी सेवक राजा के पास से
गुजरे, और सभी करेती, सभी पलेती और गती (गत से
छ: सौ व्यक्ति) राजा के पास से गुजरे।

19राजा ने गत के इत्तै से कहा, "तुम लोग भी हमारे
साथ क्यों जा रहे हो? लौट जाओ और नये राजा
(अबशालोम) के साथ रहो। तुम विदेशी हो। यह तुम
लोगों का स्वदेश नहीं है। **20**अभी कल ही तुम हमारे
साथ जुडे। क्या मैं आज ही विभिन्न स्थानों पर जहाँ भी
जा रहा हूँ, तुम्हें अपने साथ ले जाऊँ। नहीं! लौटो और
अपने भाइयों को अपने साथ लो। मेरी प्रार्थना है कि
तुम्हारे प्रति दया और विश्वास दिखाया जाय।"

21किन्तु इत्तै ने राजा को उत्तर दिया, "यहोवा शाश्वत
है, और जब तक आप जीवित हैं, मैं आपके साथ
रहूँगा। मैं जीवन-मरण में आपके साथ रहूँगा।"

22दाऊद ने इत्तै से कहा, "आओ, हम लोग किद्रोन
नाले को पार करें।"

अत: गत का इत्तै और उसके सभी लोग अपने बच्चों
सहित किद्रोन नाले के पार गए। **23**सभी लोग जोर से रो
रहे थे। राजा दाऊद ने किद्रोन नाले को पार किया। तब
सभी लोग मरुभूमि की ओर बढ़े। **24**सादोक और उसके
साथ के लेवीवंशी परमेश्वर के साक्षीपत्र के सन्दूक को
ले चल रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को
नीचे रखा। एब्यातार ने तब तक प्रार्थना* की जब तक
सभी लोग यरूशलेम से बाहर नहीं निकल गए।

25राजा दाऊद ने सादोक से कहा, "परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक को यरूशलेम लौटा ले जाओ। यदि यहोवा
मुझ पर दयालु है तो वह मुझे वापस लौटाएगा, और
यहोवा मुझे अपना पवित्र संदूक, और वह स्थान जहाँ
वह रखा है, देखने देगा। **26**किन्तु यदि यहोवा कहता है
कि वह मुझ पर प्रसन्न नहीं है तो वह मेरे विरुद्ध, जो
कुछ भी चाहता है, कर सकता है।"

27राजा ने याजक सादोक से कहा, "तुम एक दुष्टा
हो। शान्तिपूर्वक नगर को जाओ। अपने पुत्र अहीमास
और एब्यातार के पुत्र योनातन को अपने साथ लो।
28मैं उन स्थानों के निकट प्रतीक्षा करूँगा जहाँ से लोग
मरुभूमि में जाते हैं। मैं वहाँ तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब
तक तुमसे कोई सूचना नहीं मिलती।"

29इसलिये सादोक और एब्यातार परमेश्वर का पवित्र
सन्दूक वापस यरूशलेम ले गए और वहीं ठहरे।

अहीतोपेल के विरुद्ध दाऊद की प्रार्थना

30दाऊद जैतूनों के पर्वत पर चढ़ा। वह रो रहा था।
उसने अपना सिर ढक लिया और वह बिना जूते के
गया। दाऊद के साथ के सभी व्यक्तियों ने भी अपना
सिर ढक लिया। वे दाऊद के साथ रोते हुए गए।

31एक व्यक्ति ने दाऊद से कहा, "अहीतोपेल लोगों में
से एक है जिसने अबशालोम के साथ योजना बनाई।"
तब दाऊद ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना
करता हूँ कि तू अहीतोपेल की सलाह को विफल कर
दे।" **32**दाऊद पर्वत की चोटी पर आया। यही वह स्थान
था जहाँ वह प्राय: परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उस
समय एरेकी हूशै उसके पास आया। हूशै का अंगरखा
फटा था और उसके सिर पर धूलि थी।*

33दाऊद ने हूशै से कहा, "यदि तुम मेरे साथ चलते हो
तो तुम देख-रेख करने वाले अतिरिक्त व्यक्ति होगे।
34किन्तु यदि तुम यरूशलेम को लौट जाते हो तो तुम
अहीतोपेल की सलाह को व्यर्थ कर सकते हो। अबशालोम
से कहो, 'महाराज, मैं आपका सेवक हूँ। मैंने आपके
पिता की सेवा की, किन्तु अब मैं आपकी सेवा करूँगा।'
35याजक सादोक और एब्यातार तुम्हारे साथ होंगे। तुम्हें
वे सभी बातें उनसे कहनी चाहिए जिन्हें तुम राजमहल
में सुनो। **36**सादोक का पुत्र अहीमास और एब्यातार का
पुत्र योनातन उनके साथ होंगे। तुम उन्हें, हर बात जो
सुनो, मुझसे कहने के लिये भेजोगे।"

प्रार्थना शाब्दिक "आगे बढ़े" इसका अर्थ "सुगन्धि जलाना", बलि-भेट करना, या इसका अर्थ यह हो सकता है कि एब्यातार तब तक पवित्र सन्दूक की बगल में खड़ा रहा जब तक सभी लोग वहाँ से नहीं निकले।

हूशै ... धूलि थी यह प्रकट करता था कि वह बहुत दु:खी है।

37तब दाऊद का मित्र हूशै नगर में गया, और अबशालोम
यरूशलेम आया।

सीबा दाऊद से मिलता है

16 दाऊद जैतून पर्वत की चोटी पर थोड़ी दूर चला।
वहाँ मपीबोशेत का सेवक सीबा, दाऊद से मिला।
सीबा के पास काठी सहित दो खच्चर थे। खच्चरो पर दो
सौ रोटियाँ, सौ किशमिश के गुच्छे, सौ ग्रीष्मफल और
दाखमधु से भरी एक मशक थी। 2राजा दाऊद ने सीबा
से कहा, "ये चीजें किसलिये हैं?"

सीबा ने उत्तर दिया, "खच्चर राजा के परिवार की
सवारी के लिये है। रोटी और ग्रीष्म फल सेवकों को
खाने के लिये हैं और यदि कोई व्यक्ति मरुभूमि में
कमजोरी महसूस करे तो वह दाखमधु पी सकेगा।"

3राजा ने पूछा, "मपीबोशेत कहाँ है?"

सीबाने राजा को उत्तर दिया, "मपीबोशेत यरूशलेम में
ठहरा है क्योंकि वह सोचता है, 'आज इस्राएली मेरे
पितामह का राज्य मुझे वापस दे देंगे।"

4तब राजा ने सीबा से कहा, "बहुत ठीक। जो कुछ
मपीबोशेत का है उसे अब मैं तुम्हें देता हूँ।"

सीबा ने कहा, "मैं आपको प्रणाम करता हूँ। मैं आशा
करता हूँ कि मैं आपको सदा प्रसन्न कर सकूँगा।"

शिमी दाऊद को शाप देता है

5दाऊद बहूरीम पहुँचा। शाऊल के परिवार का एक
व्यक्ति बहूरीम से बाहर निकला। इस व्यक्ति का नाम
शिमी था जो गेरा का पुत्र था। शिमी दाऊद को बुरा
कहता हुआ बाहर आया, और वह बुरी-बुरी बातें
बार-बार कहता रहा।

6शिमी ने दाऊद और उसके सेवकों पर पत्थर फैंकना
आरम्भ किया। किन्तु लोग और सैनिक दाऊद के
चारों ओर इकट्ठे हो गए-वे उसके चारों ओर थे।
7शिमी ने दाऊद को शाप दिया। उसने कहा, "ओह
हत्यारे! भाग जाओ, निकल जाओ, निकल जाओ। 8यहोवा
तुम्हें दण्ड दे रहा है। क्यों? क्योंकि तुमने शाऊल के
परिवार के व्यक्तियों को मार डाला। तुमने शाऊल के
राजपद को चुराया। किन्तु अब यहोवा ने राज्य तुम्हारे
पुत्र अबशालोम को दिया है। अब वे ही बुरी घटनायें
तुम्हारे लिये घटित हो रही हैं। क्यों? क्योंकि तुम हत्यारे
हो।"

9सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा, "मेरे
प्रभु, राजा! यह मृत कुत्ता आपको शाप क्यों दे रहा
है? मुझें आगे जाने दें और शिमी का सिर काट
लेने दें।"

10किन्तु राजा ने उत्तर दिया, "सरूयाह के पुत्रों। मैं
क्या कर सकता हूँ? निश्चय ही शिमी मुझे शाप दे रहा
है। किन्तु यहोवा ने उसे मुझे शाप देने को कहा।"

11दाऊद ने अबीशै और अपने सभी सेवकों से यह भी
कहा, "देखो मेरा अपना पुत्र ही (अबशालोम) मुझे
मारने का प्रयत्न कर रहा है। यह व्यक्ति (शिमी), जो
बिन्यामीन परिवार समूह का है, मुझको मार डालने का
अधिक अधिकारी है। उसे अकेला छोड़ो। उसे मुझे
बुरा-भला कहने दो। यहोवा ने उसे ऐसा करने को
कहा हैं। 12संभव है कि उन बुराइयों को जो मेरे साथ
हो रही है, यहोवा देखे। तब संभव है कि यहोवा मुझे
आज शिमी द्वारा कही गई हर एक बात के बदले, कुछ
अच्छा दे।"

13इसलिये दाऊद और उसके अनुयायी अपने रास्तें
पर नीचे सड़क से उतर गए। किन्तु शिमी दाऊद के
पीछे लगा रहा। शिमी सड़क की दूसरी ओर चलने
लगा। शिमी अपने रास्ते पर दाऊद को बुरा-भला
कहता रहा। शिमी ने दाऊद पर पत्थर और धूलि भी
फैंकी। 14राजा दाऊद और उसके सभी लोग यरदन
नदी पुहँचे। राजा और उसके लोग थकगए थे। अत:
उन्होंने बहूरीम में विश्राम किया।

15अबशालोम, अहीतोपेल और इस्राएल के सभी लोग
यरूशलेम आए। 16दाऊद का एरेकी मित्र हूशै अबशालोम
के पास आया। हूशै ने अबशालोम से कहा, "राजा
दीर्घायु हो। राजा दीर्घायु हो!"

17अबशालोम ने पूछा, "तुम अपने मित्र दाऊद के
विश्वासपात्र क्यों नहीं हो? तुमने अपने मित्र के साथ
यरूशलेम को क्यों नहीं छोड़ा?"

18उन्होंने कहा, "मैं उस व्यक्ति का हूँ जिसे यहोवा
चुनता है। इन लोगों ने और इस्राएल के लोगों ने आपको
चुना। मैं आपके साथ रहूँगा। 19बीते समय में मैंने आपके
पिता की सेवा की। इसलिये, अब मैं दाऊद के पुत्र की
सेवा करूँगा। मैं आपकी सेवा करूँगा।"

अबशालोम अहीतोपेल से सलाह लेता है

20अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, "कृपया हमें
बताये कि क्या करना चाहिये।"

21अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, "तुम्हारे पिता ने
अपनी कुछ रखैल को घर की देख-भाल के लिये
छोड़ा है। जाओ, और उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध
करो। तब सभी इस्राएली यह जानेंगे कि तुम्हारे पिता
तुमसे घृणा करते हैं और तुम्हारे सभी लोग तुमको
अधिक समर्थन देने के लिये उत्साहित होंगे।"

22तब उन लोगों ने अबशालोम के लिये महल की छत
पर एक तम्बू डाला और अबशालोम ने अपने पिता की
रखैलों के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। सभी इस्राएलियों
ने इसे देखा। 23उस समय अहीतोपेल की सलाह दाऊद
और अबशालोम दोनों के लिये बहुत महत्वपूर्ण थी। यह
उतनी ही महत्वपूर्ण थी जितनी मनुष्य के लिये परमेश्वर
की बात।

अहीतोपेल दाऊद के बारे में सलाह देता है

17 अहीतोपेल ने अबशालोम से यह भी कहा, "मुझे
अब बारह हजार सैनिक चुनने दो। तब मैं आज
की रात दाऊद का पीछा करूँगा 2मैं उसे तब पकड़ूँगा
जब वह थका तथा कमजोर होगा। मैं उसे भयभीत
करूँगा। और उसके सभी व्यक्ति उसे छोड़ भागेंगे।
किन्तु मैं केवल राजा दाऊद को मारुंगा। 3तब मैं सभी
लोगों को तुम्हारे पास वापस लाऊँगा। यदि दाऊद मर
गया तो शेष सब लोगों को शान्ति प्राप्त होगी।"

4यह योजना अबशालोम और इस्राएल के सभी प्रमुखों
को पसन्द आई। 5किन्तु अबशालोम ने कहा, "एरेकी
हूशै को अब बुलाओ। मैं उससे भी सुनना चाहता हूँ कि
वह क्या कहता है।"

हूशै अहीतोपेल की सलाह नष्ट करता है

6हूशै अबशालोम के पास आया। अबशालोम ने हूशै
से कहा, "अहीतोपेल ने यह योजना बताई है। क्या हम
लोग इस पर अमल करें? यदि नहीं तो हमें, अपनी
बताओ।"

7हूशै ने अबशालोम से कहा, "इस समय अहीतोपेल
की सलाह ठीक नहीं है।" 8उसने आगे कहा, "तुम
जानते हो कि तुम्हारे पिता और उनके आदमी शक्तिशाली
हैं। वे उस रीछनी की तरह खुंखार हैं जिसके बच्चे छीन
लिये गये हों। तुम्हारा पिता कुशल योद्धा है। वह सारी
रात लोगों के साथ नहीं ठहरेगा। 9वह पहले ही से
संभवत: किसी गुफा या अन्य स्थान पर छिपा है। यदि
तुम्हारा पिता तुम्हारे व्यक्तियों पर पहले आक्रमण करता
है तो लोग इसकी सूचना पांएगे, और वे सोचेंगे, 'अबशालोम
के समर्थक हार रहे हैं!' 10तब वे लोग भी जो सिंह की
तरह वीर हैं, भयभीत हो जाएँगे। क्यों? क्योंकि सभी
इस्राएली जानते हैं कि तुम्हारा पिता शक्तिशाली योद्धा है
और उसके आदमी वीर हैं।"

11"मेरा सुझाव यह है: तुम्हें दान से लेकर बेर्शेबा तक
के सभी इस्राएलियों को इकट्ठा करना चाहिये। तब
बड़ी संख्या में लोग समुद्र की रेत के कणों समान होंगे।
तब तुम्हें स्वयं युद्ध में जाना चाहिये। 12हम दाऊद को
उस स्थान से, जहाँ वह छिपा है, पकड़ लेंगे। हम दाऊद
पर उस प्रकार टूट पड़ेंगे जैसे ओस भूमि पर पड़ती है।
हम लोग दाऊद और उसके सभी व्यक्तियों को मार
डालेंगे। कोई व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा जायेगा। 13यदि
दाऊद किसी नगर में भागता है तो सभी इस्राएली उस
नगर में रस्सियाँ लाऐंगे और हम लोग उस नगर की
दिवारों को घसीट लेगें। उस नगर का एक पत्थर भी
नहीं छोड़ा जाएगा।"

14अबशालोम और इस्राएलियों ने कहा, "एरेकी हूशै
की सलाह अहीतोपेल की सलाह से अच्छी है।" उन्होंने
ऐसा कहा क्योंकि यह यहोवा की योजना थी। यहोवा नें
अहीतोपेल की सलाह की व्यर्थ करने की योजना बनाई
थी। इस प्रकार यहोवा अबशालोम को दण्ड दे सकता
था।

हूशै दाऊद के पास चेतावनी भेजता है

15हूशै ने वे बातें याजक सादोक और एब्यातार से
कहीं। हूशै ने उस योजना के बारे में उन्हें बताया जिसे
अहीतोपेल ने अबशालोम और इस्राएल के प्रमुखों को
सुझाया था। हूशै ने सादोक और एब्यातार को वह
योजना भी बताई जिसे उसने सुझाया था। हूशै ने कहा,
16"शीघ्र! दाऊद को सूचना भेजो। उससे कहो कि आज
की रात वह उन स्थानों पर न रहे जहाँ से लोग मरुभूमि
को पार करते हैं। अपितु यरदन नदी को तुरन्त पार
कर ले। यदि वह नदी को पार कर लेता है तो राजा
और उसके लोग नहीं पकड़े जायेंगे।"

17याजकों के पुत्र योनातन और अहीमास, एनरोगेल
पर प्रतीक्षा कर रहे थे। वे नगर में जाते हुए दिखाई नहीं
पड़ना चाहते थे, अत: एक गुलाम लड़की उनके पास
आई। उसने उन्हें सन्देश दिया। तब योनातन और अहीमास
गए और उन्होंने यह सन्देश राजा दाऊद को दिया।

18किन्तु एक लड़के ने योनातन और अहीमास को
देखा। लड़का अबशालोम से कहने के लिये दौड़ा। योनातन
और अहीमास तेजी से भाग निकले। वे बहारीम में एक
व्यक्ति के घर पहुँचे। उस व्यक्ति के आँगन में एक
कुँआ था। योनातन और अहीमास इस कुँए में उत्तर गये।
19उस व्यक्ति की पत्नी ने उस पर एक चादर डाल दी।
तब उसने पूरे कुँए को अन्न से ढक दिया। कुँआ अन्न
की ढेर जैसा दिखता था, इसलिये कोई व्यक्ति यह नहीं
जान सकता था कि योनातन और अहीमास वहाँ छिपे
हैं। 20अबशालोम के सेवक उस घर की स्त्री के पास
आए। उन्होंने पूछा, "योनातन और अहीमास कहाँ है?"

उस स्त्री ने अबशालोम के सेवकों से कहा, "वे पहले
ही नाले को पार कर गए हैं।"

अबशालोम के सेवक तब योनातन और अहीमास की
खोज में चले गए। किन्तु वे उनको न पा सके। अत:
अबशालोम के सेवक यरूशलेम लौट गए।

21जब अबशालोम के सेवक चले गए , योनातन और
अहीमास कुँए से बाहर आए। वे गए और उन्होंने दाऊद
से कहा, "शीघ्रता करें, नदी को पार कर जायँ। अहीतोपेल
ने ये बातें आपके विरुद्ध कही हैं।"

22तब दाऊद और उसके सभी लोग यरदन नदी के
पार चले गए। सूर्य निकलने के पहले दाऊद के सभी
लोग यरदन नदी को पार कर चुके थे।

अहीतोपेल आत्महत्या करता है

23अहीतोपेल ने देखा कि इस्राएली उसकी सलाह नहीं
मानते। अहीतोपेल ने अपने गधे पर काठी रखी। वह

अपने नगर को घर चला गया। उसने अपने परिवार के लिये योजना बनाई। तब उसने अपने को फाँसी लगा ली। जब अहीतोपेल मर गया, लोगों ने उसे उसकी पिता की कब्र में दफना दिया।

अबशालोम यरदन नदी को पार करता है

24दाऊद महनैम पहुँचा। अबशालोम और सभी इस्राएली
जो उसके साथ थे, यरदन नदी को पार कर गए।
25अबशालोम ने अमासा को सेना का सेनापति बनाया।
अमासा ने योआब का स्थान लिया।* अमासा इस्राएली यित्रों का पुत्र था। अमासा की माँ, सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री, अबीगैल थी* (सरूयाह योआब की माँ थी।)

26अबशालोम और इस्राएलियों ने अपना डेरा गिलाद प्रदेश में डाला।

शोबी, माकीर, बर्जिल्लै

27दाऊद महनैम पहुँचा। शोबी, माकीर और बर्जिल्लै उस स्थान पर थे। (नाहाश का पुत्र शोबी अम्मोनी नगर रब्बा का था। अम्मीएल का पुत्र माकीर लो-दोबर का
था, और बर्जिल्लै, रेगलीम, गिलाद का था।) 28–29उन्होंने
कहा, "मरुभूमि में लोग थके, भूखे और प्यासे हैं।" इसलिये वे दाऊद और उसके आदमियों के खाने के लिये बहुत-सी चीजें लाये। वे बिस्तर, कटोरे और मिट्टी के बर्तन ले आए। वे गेंहू, जौ आटा, भूने अन्न फलियाँ, तिल, सूखे बीज, शहद, मक्खन, भेड़ें और गाय के दूध का पनीर भी ले आए।

दाऊद युद्ध की तैयारी करता है

18 दाऊद ने अपने लोगों को गिना। उसने हजार सैनिकों और सौ सैनिकों का संचालन करने
के लिये नायक चुने। 2दाऊद ने लोगों को तीन टुकड़ियों
में बाँटा, और तब दाऊद ने लोगों को आगे भेजा। योआब एक तिहाई सेना का नायक था। अबीशै सरूयाह का पुत्र, योआब का भाई सेना के दूसरे तिहाई भाग का नायक था, और गत का इत्तै अन्तिम तिहाई भाग का नायक था।

राजा दाऊद ने लोगों से कहा, "मैं भी तुम लोगों के साथ चलूँगा।"

3किन्तु लोगों ने कहा, "नहीं! आपको हमारे साथ नहीं जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि यदि हम लोग युद्ध से भागे तो अबशालोम के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। यदि हम आधे मार दिये जाए तो भी अबशालोम के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। किन्तु आप हम लोगों के दस हजार के बराबर हैं। आपके लिये अच्छा है कि आप नगर में रहें। तब, यदि हमें मदद की आवश्यकता पड़े तो आप सहायता कर सकें।"

4राजा ने अपने लोगों से कहा, "मैं वहीं करूँगा जिसे आप लोग सर्वोत्तम समझते हैं।"

तब राजा द्वार की बगल में खड़ा रहा। सेना आगे बढ़ गई। वे सौ और हजार की टुकड़ियों में गए।

"युवक अबशालोम के साथ उदार रहो!"

5राजा ने योआब, अबीशै और इत्तै को आदेश दिया। उसने कहा, "मेरे लिये यह करो: युवक अबशालोम के प्रति उदार रहना!" सभी लोगों ने अबशालोम के बारे में नायको के लिये राजा का आदेश सुना।

दाऊद की सेना अबशालोम की सेना को हराती है

6दाऊद की सेना अबशालोम के इस्राएलियों के विरुद्ध
रणभूमि में गई। उन्होंने एप्रैम के वन में युद्ध किया।
7दाऊद की सेना ने इस्राएलियों को हरा दिया। उस दिन
बीस हजार व्यक्ति मारे गए। 8युद्ध पूरे देश में फैल गया।
किन्तु उस दिन तलवार से मरने की अपेक्षा जंगल में व्यक्ति आधिक मरे।

9ऐसा हुआ कि अबशालोम दाऊद के सेवकों से मिला। अबशालोम बच भागने के लिये अपने खच्चर पर चढ़ा। खच्चर विशाल बांज के वृक्ष की शाखाओं के नीचे गया। शाखायें मोटी थीं और अबशालोम का सिर पेड़ में फँस गया। उसका खच्चर उसके नीचे से भाग निकला अत: अबशालोम भूमि के ऊपर लटका रहा।

10एक व्यक्ति ने यह होते देखा। उसने योआब से कहा, "मैंने अबशालोम को एक बांज के पेड़ में लटके देखा है।"

11योआब ने उस व्यक्ति से कहा, "तुमने उसे मार क्यों नहीं डाला, और उसे जमीन पर क्यों नहीं गिर जाने दिया? मैं तुम्हें एक पेटी और चाँदी के दस सिक्के देता।"

12उस व्यक्ति ने योआब से कहा, "मैं राजा के पुत्र को
तब भी चोट पहुँचाने की कोशिश नहीं करता जहाँ तुम मुझे हजार चाँदी के सिक्के देते। क्यों? क्योंकि हम लोगों ने तुमको, अबीशै और इत्तै को दिये गए राजा के आदेश को सुना। राजा ने कहा, 'सावधान रहो, युवक
अबशालोम को चोट ने पहुँचे।' 13यदि मैंने अबशालोम
को मार दिया होता तो राजा स्वयं इसका पता लगा लेता और तुम मुझे सजा देते।"

14योआब ने कहा, "मै तुम्हारे साथ समय नष्ट नहीं करूँगा!"

अमासा ... लिया योआब तब भी दाऊद का समर्थन करता था। योआब दाऊद की सेना सेनापतियों में से एक था जब दाऊद अबशालोम से भाग रहा था। देखें 2शमू. 18:2।

अमासा .... थी शाब्दिक यित्री ने सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री अबीगैल के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया था।

अबशालोम अब भी बांज वृक्ष में लटका हुआ, जीवित था। योआब ने तीन भाले लिये। उसने भालों को अबशालोम पर फेंका। भाले अबशालोम के हृदय को बेधते हुये निकल गये। **15**योआब के साथ दस युवक थे जो उसे युद्ध में सहायता करते थे। वे दस व्यक्ति अबशालोम के चारों ओर आए और उसे मार डाला।

16योआब ने तुरही बजाई और अबशालोम के इस्राएली लोगों का पीछा करना बन्द करने को कहा। **17**तब योआब के व्यक्तियों ने अबशालोम का शव उठाया और उसे जंगल के एक विशाल गड्हे में फेंक दिया। उन्होंने विशाल गड्हा को बहुत से पत्थरों से भर दिया।

18जब अबशालोम जीवित था, उसने राजा की घाटी में एक स्तम्भ खड़ा किया था। अबशालोम ने कहा था, "मेरा कोई पुत्र मेरे नाम को चलाने वाला नहीं है।" इसलिये उसने स्तम्भ को अपना नाम दिया। वह स्तम्भ आज भी "अबशालोम का स्मृति-चिन्ह" कहा जाता है।

योआब दाऊद को सूचना देता है

19सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से कहा, "मुझे अब दौड़ जाने दो और राजा दाऊद को सूचना पहुँचाने दो। मैं उससे कहूँगा कि यहोवा ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से मुक्त कर दिया है।"

20योआब ने अहीमास को उत्तर दिया, "नहीं, आज तुम दाऊद को सूचना नहीं दोगे। तुम सूचना किसी अन्य समय पहुँचा सकते हो, किन्तु आज नहीं, क्यों? क्योंकि राजा का पुत्र मर गया है।"

21तब योआब ने एक कुशी व्यक्ति से कहा, "जाओ राजा से वह सब कहो जो तुमने देखा है।" कुशी ने योआब को प्रणाम किया।

तब कुशी दाऊद को सूचना देने दौड़ पड़ा।

22किन्तु सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से फिर प्रार्थना की, "जो कुछ भी हो, उसकी चिन्ता नहीं, कृपया मुझे भी कुशी के पीछे दौड़ जाने दें।"

योआब ने कहा, "बेटे! तुम सूचना क्यों ले जाना चाहते हो? तुम जो सूचना ले जाओगे उसका कोई पुरस्कार नहीं मिलेगा।"

23अहीमास ने उत्तर दिया, "चाहे जो हो, चिन्ता नहीं, मैं दौड़ जाऊँगा।"

योआब ने अहीमास से कहा, "दौड़ो।"

तब अहीमास यरदन की घाटी से होकर दौड़ा। वह कुशी को पीछे छोड़ गया।

दाऊद सूचना पाता है

24दाऊद दोनों दरवाजों के बीच बैठा था। पहरेदार द्वार की दीवारों के ऊपर छत पर गया। पहरेदार ने ध्यान से देखा और एक व्यक्ति को अकेले दौड़ते देखा। **25**पहरेदार ने दाऊद से कहने के लिये जोर से पुकारा।

राजा दाऊद ने कहा, "यदि व्यक्ति अकेला है तो वह सूचना ला रहा है।"

व्यक्ति नगर के निकट से निकट आता जा रहा था। **26**पहरेदार ने दूसरे व्यक्ति को दौड़ते देखा। पहरेदार ने द्वाररक्षक को बुलाया, "देखो! दूसरा व्यक्ति अकेले दौड़ रहा है।"

राजा ने कहा, "वह भी सूचना ला रहा है।"

27पहरेदार ने कहा, "मुझे लगता है कि पहला व्यक्ति सादोक का पुत्र अहीमास की तरह दौड़ रहा है।"

राजा ने कहा, "अहीमास अच्छा आदमी है। वह अच्छी सूचना ला रहा होगा।"

28अहीमास ने राजा को पुकार कर कहा। "सब कुछ बहुत अच्छा है!" अहीमास राजा केसामने प्रणाम करने झुका। उसका माथा भूमि के समीप था। अहीमास ने कहा, अपने यहोवा परमेश्वर की स्तुति करो! मेरे स्वामी राजा, यहोवा ने उन व्यक्तियों को हरा दिया है जो आपके विरुद्ध थे।"

29राजा ने पूछा, "क्या युवक अबशालोम कुशल से है?"

अहीमास ने उत्तर दिया, "जब योआब ने मुझे भेजा तब मैंने कुछ बड़ी उत्तेजना देखी। किन्तु मैं यह नहीं समझ सका कि वह क्या था?"

30तब राजा ने कहा, "यहाँ खड़े रहो, और प्रतीक्षा करो।" अहीमास हटकर खड़ा हो गया और प्रतिक्षा करने लगा। **31**कुशी आया। उसने कहा, "मेरे स्वामी राजा के लिये सूचना। आज यहोवा ने उन लोगों को सजा दी है जो आपके विरुद्ध थे!"

32राजा ने कुशी से पूछा, "क्या युवक अबशालोम कुशल से है?"

कुशी ने उत्तर दिया, "मुझे आशा है कि आपके शत्रु और सभी लोग जो आपके विरुद्ध चोट करने आयेंगे, वे इस युवक (अबशालोम) की तरह सजा पायेंगे।"

33तब राजा ने समझ लिया कि अबशालोम मर गया है। राजा बहुत परेशान हो गया। वह नगर द्वार के ऊपर के कमरे में चला गया। वह वहाँ रोया। वह अपने कमरे में गया, और अपने रास्ते पर चलते उसने कहा, "ऐ मेरे पुत्र अबशालोम! मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये मर गया होता। ऐ अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र!"

योआब दाऊद को फटकारता है

19 लोगों ने योआब को सूचना दी। उन्होंने योआब से कहा, "देखो, राजा अबशालोम के लिये रो रहा है और बहुत दु:खी है।"

2दाऊद की सेना ने उस दिन विजय पाई थी। किन्तु वह दिन सभी लोगों के लिये बहुत शोक का दिन हो गया। यह शोक का दिन था, क्योंकि लोगों ने सुना, "राजा अपने पुत्र के लिये बहुत दु:खी है।"

3लोग नगर में चुपचाप आए। वे उन लोगों की तरह थे
जो युद्ध में पराजित हो गए हो और भाग आएं हों। 4राजा
ने अपना मुँह ढक लिया था। वह फूट-फूट कर रो
रहा था, "मेरे पुत्र अबशालोम, ऐ अबशालोम। मेरे पुत्र,
मेरे बेटे!"

5योआब राजा के महल में आया। योआब ने राजा से
कहा, "आज तुम अपने सभी सेवकों के मुँह को भी
लज्जा से ढके हो! आज तुम्हारे सेवकों ने तुम्हारा जीवन
बचाया। उन्होंने तुम्हारे पुत्रों, पुत्रियों, पत्नियों, और दासियों
के जीवन को बचाया। 6तुम्हारे सेवक इसलिये लज्जित हैं
कि तुम उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे घृणा करते हैं
और तुम उनसे घृणा करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं।
आज तुमने यह स्पष्ट कर दिया है कि तुम्हारे अधिकारी
और तुम्हारे लोग तुम्हारे लिये कुछ नहीं हैं। आज मैं
समझता हूँ कि यदि अबशालोम जीवित रहता और हम
सभी मार दिये गए होते तो तुम्हें बड़ी प्रसन्नता होती।
7अब खड़े होओ तथा अपने सेवकों से बात करो और
उनको प्रोत्साहित करो। मैं यहोवा की शपथ खाकर
कहता हूँ कि यदि तुम यह करने बाहर नहीं निकलते
तो आज की रात तुम्हारे साथ कोई व्यक्ति नहीं रह
जायेगा। बचपन से आज तक तुम पर जितनी विपत्तियँ
आई हैं, उन सबसे यह विपत्ति और बदतर होगी।"

8तब राजा नगर-द्वार पर गया। सूचना फैली कि राजा
नगर-द्वार पर है। इसलिये सभी लोग राजा को देखने
आये।

दाऊद फिर राजा बनता है

सभी अबशालोम के समर्थक इस्राएली अपने घरो को
भाग गए थे। 9इस्राएली के सभी परिवार समूहों के लोग
आपस में तर्क-वितर्क करने लगे। उन्होंने कहा, "राजा
दाऊद ने हमें पलिश्तियों और हमारे अन्य शत्रुओं से
बचाया। दाऊद अबशालोम के सामने भाग खड़ा हुआ।
10हम लोगों ने अबशालोम को अपने ऊपर शासन
करने के लिये चुना था। किन्तु अब वह युद्ध में मर
चुका है। हम लोगों को दाऊद को फिर राजा बनाना
चाहिये।"

11राजा दाऊद ने याजक सादोक और एब्यातार को
सन्देश भेजा। दाऊद ने कहा, "यहूदा के प्रमुखों से बात
करो। कहो, 'तुम लोग अन्तिम परिवार समूह क्यों हो
जो राजा दाऊद को अपने राजमहल में वापस लाना
चाहते हो? देखों, सभी इस्राएली राजा को महल में लाने
के बारे में बातें कर रहे हैं। 12तुम मेरे भाई हो, तुम मेरे
परिवार हो। फिर भी तुम्हारा परिवार समूह राजा को
वापस लाने में अन्तिम क्यों रहा?' 13और अमासा से
कहो, 'तुम मेरे परिवार के अंग हो। परमेश्वर मुझे दण्ड
दे यदि मैं तुमको योआब के स्थान पर सेना का नायक
बनाऊँ।'"

14दाऊद ने यहूदा के लोगों के दिल को प्रभावित
किया, अत: वे एक व्यक्ति की तरह एकमत हो गए।
यहूदा के लोगों ने राजा को सन्देश भेजा। उन्होंने कहा,
"अपने सभी सेवकों के साथ वापस आओ!"

15तब राजा दाऊद यरदन नदी तक आया। यहूदा के
लोग राजा से मिलने गिलगाल आए। वे इसलिये आए कि
वे राजा को यरदन नदी के पार ले जाए।

शिमी दाऊद से क्षमा याचना करता है

16गेरा का पुत्र शिमी बिन्यामीन परिवार समूह का
था। वह बहूरीम में रहता था। शिमी ने राजा दाऊद से
मिलने की शीघ्रता की। शिमी यहूदा के लोगों के साथ
आया। 17शिमी के साथ बिन्यामीन परिवार के एक
हजार लोग भी आए। शाऊल के परिवार का सेवक
सीबा भी आया। सीबा अपने साथ अपने पन्द्रह पुत्रों और
बीस सेवकों को लाया। ये सभी लोग राजा दाऊद से
मिलने के लिये यरदन नदी पर शीघ्रता से पहुँचे।

18लोग यरदन नदी पार करके राजा के परिवार को
यहूदा में वापस लाने के लिये गये। राजा ने जो चाहा,
लोगों ने किया। जब राजा नदी पार कर रहा था, गेरा
का पुत्र शिमी उससे मिलने आया। शिमी राजा के
सामने भूमि तक प्रणाम करने झुका। 19शिमी ने राजा
से कहा, "मेरे स्वामी, जो मैंने अपराध किये उन पर
ध्यान न दे। मेरे स्वामी राजा, उन बुरे कामों को याद न
करे जिन्हें मैंने तब किये जब आपने यरूशलेम को
छोड़ा। 20मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किये हैं। मेरे स्वामी
राजा, यही कारण है कि मैं यूसुफ के परिवार* का
पहला व्यक्ति हूँ जो आज आपसे मिलने आया हूँ।"

21किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने कहा, "हमें शिमी
को अवश्य मार डालना चाहिये क्योंकि इसने यहोवा के
चुने राजा के विरुद्ध बुरा होने की याचना की।"

22दाऊद ने कहा, "सरूयाह के पुत्रों, मैं तुम्हारे साथ
क्या करूँ? आज तुम मेरे विरुद्ध हो। कोई व्यक्ति इस्राएल
में मारा नहीं जाएगा। आज मैं जानता हूँ कि मैं इस्राएल
का राजा हूँ। 23तब राजा ने शिमी से कहा, "तुम मरोगे
नहीं।" राजा ने शिमी को वचन दिया कि वह शिमी को
स्वयं नहीं मारेगा।*

मपीबोशेत दाऊद से मिलने जाता है

24शाऊल का पौत्र मपीबोशेत राजा दाऊद से मिलने
आया। मपीबोशेत ने उस सारे समय तक अपने पैरों की

यूसुफ का परिवार संभवत: इसका अर्थ वे इस्राएली हैं जो अबशालोम के समर्थक थे। कई बार एप्रैम यूसुफ का पुत्र नाम उत्तरी इस्राएल के सभी परिवार समूहों के लिये प्रयुक्त हुआ है।

राजा ने ... मारेगा दाऊद ने शिमी को नहीं मारा किन्तु, कुछ वर्ष बाद दाऊद का पुत्र सुलैमान ने उसे वध करने का आदेश दिया। देखो 1राजा 2:44-46

चिन्ता नहीं की, अपनी मूँछों को कतरा नहीं या अपने
वस्त्र नहीं धोए जब तक राजा यरूशलेम छोड़ने के बाद
पुन: शान्ति के साथ वापिस नहीं आ गया। **25**मपीबोशेत
यरूशलेम से राजा के पास मिलने आया। राजा ने मपीबोशेत
से पूछा, "तुम मेरे साथ उस समय क्यों नहीं गए जब मैं
यरूशलेम से भाग गया था?"

26मपीबोशेत ने उत्तर दिया, "हे राजा, मेरे स्वामी! मेरे
सेवक (सीबा) ने मुझे मूर्ख बनाया। मैंने सीबा से कहा,
'मैं विकलांग हूँ। अत: गधे पर काठी लगाओ। तब मैं
गधे पर बैठूंगा, और राजा के साथ जाऊँगा।* किन्तु
मेरे सेवक ने मुझे धोखा दिया। **27**उसने मेरे बारे में
आपसे बुरी बातें कहीं। किन्तु मेरे स्वामी, राजा परमेश्वर
के यहाँ देवदूत के समान हैं। आप वही करें जो आप
उचित समझते हैं। **28**आपने मेरे पितामह के सारे परिवार
को मार दिया होता। किन्तु आपने यह नहीं किया।
आपने मुझे उन लोगों के साथ रखा जो आपकी मेज पर
खाते हैं। इसलिये मैं राजा से किसी बात के लिये शिकायत
करने का अधिकार नहीं रखता।'"

29राजा ने मपीबोशेत से कहा, "अपनी समस्याओं के
बारे में अधिक कुछ न कहो। मैं यह निर्णय करता हूँ!
तुम और सीबा भूमि का बंटवारा कर सकते हो।"

30मपीबोशेत ने राजा से कहा, "सीबा को सारी भूमि
ले लेने दें! क्यों? क्योंकि मेरे स्वामी राजा अपने महल
में शान्तिपूर्वक लौट आये हैं।"

दाऊद बर्जिल्लै से अपने साथ यरूशलेम चलने को कहता है

31गिलाद का बर्जिल्लै रोगलीम से आया। वह राजा
दाऊद के साथ यरदन नदी तक आया। वह राजा के
साथ, यरदन नदी को उसे पार कराने के लिये गया।
32बर्जिल्लै बहुत बूढ़ा आदमी था। वह अस्सी वर्ष का
था। जब दाऊद महनैम में ठहरा था तब उसने उसको
भोजन तथा अन्य चीजें दी थीं। बर्जिल्लै यह सब कर
सकता था क्योंकि वह बहुत धनी व्यक्ति था। **33**दाऊद
ने बर्जिल्लै से कहा, "नदी के पार मेरे साथ चलो। यदि
तुम मेरे साथ यरूशलेम में रहोगे तो वहाँ मैं तुम्हारी
देखभाल करूँगा।"

34किन्तु बर्जिल्लै ने राजा से कहा, "क्या आप जानते
हैं कि मैं कितना बूढ़ा हूँ? क्या आप समझते हैं कि मैं
आपके साथ यरूशलेम को जा सकता हूँ? **35**मैं अस्सी
वर्ष का हूँ। मैं इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं यह नहीं
बता सकता कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है। मैं
इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं जो खाता पीता हूँ उसका
स्वाद नहीं ले सकता। मैं इतना बूढ़ा हूँ कि आदमियों
और स्त्रियों के गाने की आवाज भी नहीं सुन सकता।
आप मेरे साथ परेशान होना क्यों चाहते हैं? **36**मैं आपकी
ओर से पुरस्कार नहीं चाहता। मैं आपके साथ नजदीक
के रास्ते से यरदन नदी को पार करूँगा। **37**किन्तु,
कृपया मुझे वापस लौट जाने दें। तब मैं अपने नगर में
मरूँगा और अपने माता-पिता की कब्र में दफनाया
जाऊँगा। किन्तु यह किम्हाम आपका सेवक हो सकता
है। मेरे प्रभु राजा उसे अपने साथ लौटने दें। जो आप
चाहें, उसके साथ करें।"

38राजा ने उत्तर दिया, "किम्हान मेरे साथ लौटेगा। मैं
तुम्हारे कारण उस पर दयालु रहूँगा। मैं तुम्हारे लिये
कुछ भी कर सकता हूँ।"

दाऊद घर लौटता है

39राजा ने बर्जिल्लै का चुम्बन किया और उसे आशीर्वाद
दिया। बर्जिल्लै घर लौट गया। और राजा तथा सभी लोग
नदी के पार वापस गये।

40राजा यरदन नदी को पार करके गिलगाल गया।
किम्हाम उसके साथ गया, यहूदा के सभी लोगों तथा
आधे इस्राएल के लोगों ने दाऊद को नदी के पार
पहुँचाया।

इस्राएली यहूदा के लोगों से तर्क-वितर्क करते हैं

41सभी इस्राएली राजा के पास आए। उन्होंने राजा से
कहा, "हमारे भाई यहूदा के लोग, आपको चुरा ले गये
और आपको और आपके परिवार को, आपके लोगों
के साथ यरदन नदी के पार ले आए। क्यों?"

42यहूदा के सभी लोगों ने इस्राएलियों को उत्तर दिया,
"क्योंकि राजा हमारा समीपी सम्बन्धी है। इस बात के
लिये आप लोग हमसे क्रोधित क्यों हैं? हम लोगों ने
राजा की कीमत पर भोजन नहीं किया है। राजा ने हम
लोगों को कोई भेंट नहीं दी।"

43इस्राएलियों ने उत्तर दिया, "हम लोग दाऊद के राज्य
के दस भाग हैं।* इसलिये हम लोगों का अधिकार
दाऊद पर तुमसे अधिक है। किन्तु तुम लोगों ने हमारी
उपेक्षा की। क्यों? वे हम लोग थे जिन्होंने सर्वप्रथम
अपने राजा को वापस लाने की बात की।"

किन्तु यहूदा ने लोगों ने इस्राएलियों को बड़ा गन्दा
उत्तर दिया। यहूदा के लोगों के शब्द इस्राएलियों के
शब्दों से अधिक शत्रुतापूर्ण थे।

मैने सीबा ... जाऊँगा संभवत: मपीबोशेत यह कह रहा था कि उसका सेवक गधा ले गया और मपीबोशेत को छोड़ गया। पढ़े 2शमु. 16:1-4

हम लोग ... है बिन्यामीन और यहूदा के दो परिवार समूह थे जो बाद में राज्य के बँटने पर यहूदा का राज्य बने। अन्य दस परिवार समूह इस्राएल राज्य में थे।

शेबा इस्राएलियों को दाऊद से अलग संचालित करता है

20 ऐसा हुआ कि बिक्री का पुत्र शेबा नाम का
एक बुरा आदमी था। शेबा बिन्यामीन परिवार
समूह का था। उसने तुरही बजाई और कहा,
"हम लोगों का कोई हिस्सा दाऊद में नहीं है। यिशै
के पुत्र का कोई अंश हममें नहीं है। पूरे इस्राएली, हम
लोग अपने डेरों में घर चले।"
2तब सभी इस्राएलियों ने दाऊद को छोड़ दिया, और
बिक्री के पुत्र शेबा का अनुसरण किया। किन्तु यहूदा
के लोग अपने राजा के साथ लगातार यरदन नदी से
यरूशलेम तक बने रहे।
3दाऊद अपने घर यरूशलेम को आया। दाऊद ने
अपनी पत्नियों में से दस को घर की देखभाल के लिये
छोड़ा था। दाऊद ने इन स्त्रियों को एक विशेष घरमें
रखा।* लोगों ने इस घर की रक्षा की। स्त्रियाँ उस घर
में तब तक रहीं जब तक वे मरी नहीं। दाऊद ने उन्हें
भोजन दिया, किन्तु उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं
किया। वे मरने के समय तक विधवा की तरह रहीं।
4राजा ने अमासा से कहा, "यहूदा के लोगों से कहो
कि वे मुझसे तीन दिन के भीतर मिले, और तुम्हें भी
यहाँ आना होगा और मेरे सामने खड़ा होना होगा।"
5तब अमासा यहूदा के लोगों को एक साथ बुलाने
गया। किन्तु उसने, जितना समय राजा ने दिया था,
उससे अधिक समय लिया।"

दाऊद अबीशै से शेबा को मारने को कहता है

6दाऊद ने अबीशै से कहा, "बिक्री का पुत्र शेबा हम
लोगों के लिये उससे भी अधिक खतरनाक है जितना
अबशालोम था। इसलिये मेरे सेवकों को लो और शेबा
का पीछा करो। शेबा को प्राचीर वाले नगरो में पहुँचने
से पहले इसे शीघ्रता से मरो। यदि शेबा प्राचीर वाले
नगरो में पहुँच जायेगा तो वह हम लोगों से बच निकलेगा।"
7योआब केव्यक्ति करेती, पलेती और सैनिक यरूशलेम
से बाहर गये। उन्होंने बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा
किया।

योआब अमासा को मार डालता है

8जब योआब और सेना गिबोन की विशाल चट्टान
तक आई, अमासा उनसे मिलने आया। योआब अपने
सैनिक पोशाक में था। योआब ने पेटी बांध रखी थी।
उसकी तलवार उसकी म्यान में थी। योआब अमासा से
मिलने आगे बढ़ा और उसकी तलवार म्यान से गिर
पड़ी। योआब ने तलवार को उठा लिया और उसे अपने
हाथ में रखा। **9**योआब ने अमासा से पूछा, "भाई, तुम
हर तरह से कुशल तो हो?"
योआब ने चुम्बन करने के लिये अपने दायें हाथ से,
अमासा को उसकी दाढ़ी से सहारे पकड़ा। **10**अमासा ने
उस तलवार पर ध्यान नहीं दिया जो उसके हाथ में थी।
योआब ने अमासा के पेट में तलवार घुसेड़ दी और
उसकी आँते भूमि पर आ पड़ी। योआब को अमासा पर
दुबारा चोट नहीं करनी पड़ी, वह पहले ही मर चुका
था।

दाऊद के लोग शेबा की खोज में लगे रहे

तब योआब और उसका भाई अबीशै दोनों ने बिक्री
के पुत्र शेबा की खोज जारी रखी। **11**योआब के युवकों
में से एक व्यक्ति अमासा के शव के पास खड़ा रहा। इस
युवक ने कहा, "हर एक व्यक्ति जो योआब और दाऊद
का समर्थन करता है, उसे योआब का अनुसरण करना
चाहिये। शेबा का पीछा करने में उसकी सहायता करो।"
12अमासा अपने ही खून में सड़क के बीच पड़ा रहा।
सभी लोग शव को देखने रुकते थे। इसलिये युवक
अमासा के शव को सड़क से ले गया और उसे मैदान में
रख दिया। तब उनसे अमासा के शव पर एक कपड़ा
डाल दिया। **13**जब अमासा का शव सड़क से हटा लिया
गया, सभी लोगों ने योआब का अनुसरण किया। वे
बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने योआब के साथ
गए।

शेबा आबेल बेतमाका को बच निकलता है

14बिक्री का पुत्र शेबा सभी इस्राएल के परिवार समूहों
से होता हुआ आबेल बेतमाका पहुँचा। सभी बेरी लोग भी
एक साथ आए और उन्होंने शेबा का अनुसरण किया।
15योआब और उसके लोग आबेल और बेतमाका
आए। योआब की सेना ने नगर को घेर लिया। उन्होंने
नगर दीवार के सहारे मिट्टी के ढेर लगाए। ऐसा करने
के बाद वे दीवार के ऊपर चढ़ सकते थे। तब योआब
के सैनिकों ने दीवार से पत्थरों को तोड़ना प्रारम्भ
किया। वे दीवार को गिरा देना चाहते थे।
16एक बुद्धिमती स्त्री नगर की ओर से चिल्लाई।
उसने कहा, "मेरी सुनो! योआब को यहाँ बुलाओ। मैं
उससे बात करना चाहती हूँ।"
17योआब उस स्त्री के पास बात करने गया। उस स्त्री
ने पूछा, "क्या तुम योआब हो?"
योआब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ।"
तब उस स्त्री ने योआब से कहा, "मैं जो कहूँ सुनो।"
योआब ने कहा, "मैं सुन रहा हूँ।"
18तब उस स्त्री ने कहा, "अतीत में लोग कहते थे,
'आबेल में सलाह माँगो तब समस्या सुलझ जाएगी।"

दाऊद ... रखा दाऊद के पुत्र अबशालोम ने दाऊद की इन "रखैलों" को, जिनके साथ शारीरिक सम्बन्ध करके, भ्रष्ट कर दिया था। देखे 2शमू. 16:21−22

19मैं इस्राएल के राजभक्त तथा शान्तिप्रिय लोगों में से एक हूँ। तुम इस्राएल के एक महत्वपूर्ण नगर को नष्ट कर रहे हो। तुम्हें, वह कोई भी चीज, जो यहोवा की है, नष्ट नहीं करनी चाहिये।"

20योआब ने कहा, "नहीं, मैं कुछ भी नष्ट नहीं करना चाहता! **21**किन्तु एक व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश का है। वह बिक्री का पुत्र शेबा है। वह राजा दाऊद के विरुद्ध हो गया है। यदि तुम उसे मेरे पास लाओ तो मैं नगर को शान्त छोड़ दूँगा।"

उस स्त्री ने कहा, "बहुत ठीक, उसका सिर दीवार के ऊपर से तुम्हारे लिये फैंक दिया जायेगा।"

22तब उस स्त्री ने बड़ी बुद्धिमानी से नगर के सभी लोगों से बातें कीं। लोगों ने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काट डाला। तब लोगों ने योआब के लिये शेबा का सिर नगर की दीवार पर से फेंक दिया।

इसलिये योआब ने तुरही बजाई और सेना ने नगर को छोड़ दिया। हर एक व्यक्ति अपने घर में गया, और योआब राजा के पास यरूशलेम लौटा।

दाऊद के सेवक लोग

23योआब इस्राएल की सारी सेना का नायक था। यहोयादा का पुत्र बनायाह, करेतियों और पलेतियों का संचालन करता था। **24**अदोराम उन लोगों का संचालन करता था जो कठिन श्रम करने के लिये विवश थे। अहिलूद का पुत्र यहोशापात इतिहासकार था। **25**शेवा सचिव था। सादोक और एब्यातार याजक थे। **26**और याईरी दाऊद का प्रमुख याजक था।

शाऊल का परिवार दण्डित हुआ

21 दाऊद के समय में भूखमरी का काल आया। इस बार भूखमरी तीन वर्ष तक रही। दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने उत्तर दिया, "इस भूखमरी का कारण शाऊल और उसका हत्यारा परिवार हैं। इस समय भूखमरी आई क्योंकि शाऊल ने गिबोनियों को मार डाला।" **2**(गिबोनी इस्राएली नहीं थे। वे ऐसे एमोरियों के समूह थे जो अभी तक जीवित छोड़ दिये गये थे। इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा की थी कि वे गिबोनी पर चोट नहीं करेंगे।* किन्तु शाऊल को इस्राएल और यहूदा के प्रति गहरा लगाव था। इसलिये उसने गिबोनियों को मारना चाहा।)

राजा दाऊद ने गिबोनी को एक साथ इकट्ठा किया। उसने उनसे बातें कीं। **3**दाऊद ने गिबोनी से कहा, "मैं आप लोगों के लिये क्या कर सकता हूँ? इस्राएल के पापों को धोने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ जिससे आप लोग यहोवा के लोगों को आशीर्वाद दे सकें?"

4गिबोनी ने दाऊद से कहा, "शाऊल और उसके परिवार के पास इतना सोना-चाँदी नहीं है कि वे उसके बदले उसे दे सकें जो उन्होंने काम किये। किन्तु हम लोगों के पास इस्राएल के किसी व्यक्ति को भी मारने का अधिकार नहीं है।"

दाऊद ने पूछा, "किन्तु मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

5गिबोनी ने दाऊद से कहा, "शाऊल ने हमारे विरुद्ध योजनायें बनाई। उसने हमारे सभी लोगों को, जो इस्राएल में बचे हुए हैं, नष्ट करने का प्रयन्त किया। **6**शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा था। इसलिये उसके सात पुत्रों को हम लोगों के सामने लाया जाये। तब हम लोग उन्हें शाऊल के गिबा पर्वत पर यहोवा के सामने फाँसी चढ़ा देंगे।"

राजा दाऊद ने कहा, "मैं उन पुत्रों को तुम्हें दे दूँगा।" **7**किन्तु राजा ने योनातन के पुत्र मपीबोशेत की रक्षा की। योनातन शाऊल का पुत्र था। दाऊद ने यहोवा के नाम पर योनातन से प्रतिज्ञा की थी। इसलिये राजा ने मपीबोशेत को उन्हें चोट नहीं पहुँचाने दिया। **8**किन्तु राजा ने अर्मोनी, और मपीबोशेत,* रिस्पा और शाऊल के पुत्रों को लिया (रिस्पा अय्या की पुत्री थी)। राजा ने रिस्पा के इन दो पुत्रों और शाऊल की पुत्री मीकल के पाँचों पुत्रों को लिया। महोल नगर का निवासी बर्जिल्लै का पुत्र अद्रीएल मेराब के सभी पाँच पुत्रों का पिता था। **9**दाऊद ने इन सात पुत्रों को गिबोनी को दे दिया। तब गिबोनी ने इन सातों पुत्रों को यहोवा के सामने गिबा पर्वत पर फाँसी दे दी। ये सातों पुत्र एक साथ मरे। वे फसल की कटाई के पहले दिन मार डाले गए। (जौ की कटाई आरम्भ होने जा रही थी।)

दाऊद और रिस्पा

10अय्या की पुत्री रिस्पा ने शोक के वस्त्र लिये और उसे चट्टान पर रख दिया। वह वस्त्र फसल की कटाई आरम्भ होने से लेकर जब तक वर्षा हुई चट्टान पर पड़ा रहा। दिन में रिस्पा अपने पुत्रों के शव को आकाश के पक्षियों द्वारा स्पर्श नहीं होने देती थी। रात को रिस्पा खेतों के जानवरों को अपने पुत्रों के शवों को छूने नहीं देती थी।

11लोगों ने दाऊद को बताया, जो कुछ शाऊल की दासी अय्या की पुत्री रिस्पा कर रही थी। **12**तब दाऊद ने शाऊल और योनातन की अस्थियाँ याबेश गिलाद के लोगों से लीं। (याबेश के लोगों ने इन अस्थियों को बेतशान के सार्वजनिक रास्ते से चुरा ली थी। यह सार्वजनिक रास्ता बेतशान में वहाँ है जहाँ पलिश्तियों ने

इस्राएलियों ... नहीं करेंगे यह यहोशू के समय में हुआ था जब गिबोनी ने धोखा दिया था। पढ़े यहोशू 9:3-15

मपीबोशेत यह मपीबोशेत नाम का दूसरा व्यक्ति है, योनातन का पुत्र नहीं।

शाऊल और योनातन के शवो को लटकाया था। पलिश्तियों ने इन शवों को शाऊल को गिलबो में मारने के बाद लटकाया था।)

13दाऊद, शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों को, गिलाद से लाया। तब लोगों ने शाऊल के सात पुत्रों के शवों को इकट्ठा किया जो फाँसी चढ़ा दिये गये थे।
14उन्होंने शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों को बिन्यामीन के जेला स्थान में दफनाया। लोगों ने शवों को शाऊल के पिता कीश की कब्र में दफनाया। लोगों ने वह सब किया जो राजा ने आदेश दिया। तब परमेश्वर ने देश के लिये की गई उनकी प्रार्थना सुनी।

पलिश्तियों के साथ युद्ध

15पलिश्तियों ने इस्राएलियों के विरुद्ध फिर युद्ध छेडा। दाऊद और उसके लोग पलिश्तियों से लड़ने गए। किन्तु दाऊद थक गया और कमजोर हो गया। 16रपाई के
वंश में से यिशबोबनोब एक था। यिशबोबनोब के भाले का वजन साढ़े सात पौंड था। यिशबोबनोब के पास एक नयी तलवार थी। उसने दाऊद को मार डालने की
योजना बनाई। 17किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने उस पलिश्ती को मार डाला और दाऊद के जीवन को बचाया।

तब दाऊद के लोगों ने दाऊद से प्रतिज्ञा की। उन्होंने उससे कहा, "तुम हम लोगों के साथ भविष्य में युद्ध करने नहीं जा सकते। यदि तुम फिर युद्ध में जाते हो और मार दिये जाते हो तो इस्राएल अपने सबसे बड़े मार्ग दर्शक को खो देगा।"

18तत्पश्चात, गोब में पलिश्तियों के साथ दूसरा युद्ध हुआ। हूशाई सिब्बकै ने सप एक अन्य रपाईवंशी पुरुष को मार डाला।

19तब गोब में फिर पलिश्तियों से एक अन्य युद्ध छिड़ा। यारयोरगीम के पुत्र एलहनान ने, जो बेतलेहेम का था, गती गोल्यत* को मार डाला। गोलयत का भाला जुलाहे की छड़ के बराबर लम्बा था।

20गत में फिर युद्ध आरम्भ हुआ। वहाँ एक विशाल व्यक्ति था। उस व्यक्ति के हर एक हाथ में छः छः उंगलियाँ और हर एक पैर में छः-छः अंगूठे थे। सब मिलाकर उसकी चौबीस उंगलियाँ और अंगूठे थे। यह व्यक्ति भी एक रपाईवंशी था। 21इस व्यक्ति ने
इस्राएल को ललकारा। किन्तु योनातन ने इस व्यक्ति को मार डाला। (योनातन दाऊद के भाई शिमी का पुत्र था।)

22ये चारों व्यक्ति गत के रपाईवंशी थे। वे सभी दाऊद और उसके लोगों द्वारा मारे गए।

गती गोलियत 1इति. 20:5 में इस पलिश्ती को गोलियत का भाई लह्मी कहा गया है।

यहोवा की स्तुति के लिये दाऊद का गीत

22 यहोवा ने दाऊद को शाऊल तथा अन्य सभी शत्रुओं से बचाया था। दाऊद ने उस समय यह गीत गाया,

2यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़, मेरा शरण-स्थल है।

3मैं सहायता पाने को परमेश्वर तक दौडूँगा। वह मेरी सुरक्षा-चट्टान है। परमेश्वर मेरी ढाल है। उसकी शक्ति मेरी रक्षक है। यहोवा मेरी ऊँचा गढ़ है, और मेरी सुरक्षा का स्थान है। मेरा रक्षक कष्टों से मेरी रक्षा करता है।

4उन्होंने मेरा उपहास किया। मैंने सहायता के लिये यहोवा को पुकारा, यहोवा ने मुझे मेरे शत्रुओं से बचाया!

5मेरे शत्रु मुझे मारना चाहते थे। मृत्यु-तरंगों ने मुझे लपेट लिया। विपत्तियाँ बाढ़-सी आई, उन्होंने मुझे भयभीत किया।

6कब्र की रस्सियाँ मेरे चारों ओर लिपटीं, मैं मृत्यु के जाल में फँसा।

7मैं विपत्ति में था, किन्तु मैंने यहोवा को पुकारा। हाँ, मैंने अपने परमेश्वर को पुकारावह अपने उपासना गृह में था,उसने मेरी पुकार सुनी,मेरी सहायता की पुकार उसके कानों में पड़ी।

8तब धरती में कम्पन हुआ, धरती डोल उठी,आकाश के आधार स्तम्भ काँप उठे।क्यों? क्योंकि यहोवा क्रोधित था।

9उसकी नाक से धुआँ निकला, उसके मुख से जलती चिनगारियाँ छिटकी, उससे दहकते अंगारे निकल पड़े।

10यहोवा ने आकाश को फाड़ कर खोल डाला, और नीचे आया, वह सघन काले मेघ पर खड़ा हुआ!

11यहोवा करूब (स्वर्गदूत) पर बैठा, और उड़ा, वह पवन के पंखों पर चढ़ कर उड़ गया।

12यहोवा ने तम्बू-से काले मेघों को अपने चारों ओर लपेट लिया, उसने सघन मेघों से जल इकट्ठा किया।

13उसका तेज इतना प्रखर था, मानो बिजली की चमक वहीं से आई हो।

14यहोवा गगन से गरजा! परमेश्वर, अति उच्च, बोला।

15यहोवा ने बाण से शत्रुओं को बिखराया, यहोवा ने बिजली भेजी, और लोग भय से भागे।

16धरती की नींव का आवरण हट गया, तब लोग सागर की गहराई देख सकते थे। वे हटे, क्योंकि यहोवा ने बातें की, उसकी अपनी नाक से तप्त वायु निकलने के कारण।

17यहोवा गगन से नीचे पहुँचा, यहोवा ने मुझे पकड़ लिया, उसने मुझे गहरे जल (विपत्ति) से निकाल लिया।

18उसने उन लोगों से बचाया, जो घृणा करते थे, मुझसे मेरे शत्रु मुझसे अधिक शक्तिशाली थे, अत: उसने मेरी रक्षा की।

19मैं विपत्ति में था, जब मेरे शत्रुओं का मुझ पर आक्रमण हुआ, किन्तु मेरे यहोवा ने मेरी सहायता की।

20यहोवा मुझे सुरक्षा में ले आया, उसने मेरी रक्षा की, क्योंकि वह मुझसे प्रेम करता है।

21यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, क्योंकि मैंने उचित किया। यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, क्योंकि मेरे हाथ पाप रहित हैं।

22क्यों? क्योंकि मैंने यहोवा के नियमों का पालन किया। मैंने अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया।

23मैं सदा याद करता हूँ यहोवा का निर्णय, मैं उसके नियमों को मानता हूँ।

24यहोवा जानता है–मैं अपराधी नहीं हूँ, मैं अपने को पापों से दूर रखता हूँ।

25यही कारण है कि यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, मैं न्यायोचित रहता हूँ। यहोवा देखता है, कि मैं स्वच्छ जीवन बिताता हूँ।

26यदि कोई व्यक्ति तुझसे प्रेम करेगा तो तू, अपनी प्रेमपूर्ण दया उस पर करोगा। यदि कोई तेरे प्रति सच्चा है, तब तू भी उसके प्रति सच्चा होगा!

27यदि कोई तेरे लिये अच्छा जीवन बिताता है, तब तू भी उसके लिये अच्छा बनेगा। किन्तु यदि कोई व्यक्ति तेरे विरुद्ध होता है, तब तू भी उसके विरुद्ध होगा।

28तू विपत्ति में विन्रम लोगों को बचायेगा, किन्तु तू घमण्डी को नीचा करेगा।

29यहोवा तू मेरा दीपक है, यहोवा मेरे चारों ओर के अंधेरे को प्रकाश में बदलता है।

30तू सैनिकों के दल को हराने में, मेरी सहायता करता है। परमेश्वर की शक्ति से मैं दीवार के ऊपर चढ़ सकता हूँ।

31परमेश्वर की शक्ति पूर्ण है। यहोवा के वचन की जाँच हो चुकी है। यहोवा रक्षा के लिये, अपने पास भागने वाले हर व्यक्ति की ढाल है।

32यहोवा के अतिरिक्त कोई अन्य परमेश्वर नहीं,
हमारे परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय–शिला
नहीं। 33परमेश्वर मेरा दृढ़ गढ़ है वह निर्दोषों की शुद्ध
आत्माओं की सहायता करता है।

34यहोवा मेरे पैरों को हिरन के पैरों–सा तेज बनाता है, वह उच्च स्थानों पर मुझे दृढ़ करता है।

35यहोवा मुझे युद्ध की शिक्षा देता है, अत: मेरी भुजायें पीतल के धनुष को चला सकती हैं।

36तू ढाल की तरह, मेरी रक्षा करता है। तेरी सहायता ने मुझे विजेता बनाया है।

37तूने मेरा मार्ग विस्तृत किया है, जिससे मेरे पैर फिसले नहीं।

38मैंने अपने शत्रुओं का पीछा किया, मैंने उन्हें नष्ट किया, मैं तब तक नहीं लौटा, जब तक शत्रु नष्ट न हुए।

39मैंने अपने शत्रुओं को नष्ट किया है, मैंने उन्हें पूरी तरह नष्ट किया है। वे फिर उठ नहीं सकते, हाँ मेरे शत्रु मेरे पैरों के तले गिरे।

40परमेश्वर तूने मुझे युद्ध के लिये, शक्तिशाली बनाया। तूने मेरे शत्रुओं को हराया है।

41तूने मेरे शुत्रओं को भगाया है, अत: मैं उन लोगों को हरा सकता हूँ जो मुझसे घृणा करते हैं।

42मेरे शत्रुओं ने सहायता चाही, किन्तु उनका रक्षक कोई नहीं था। उन्होंने यहोवा से सहायता माँगी, लेकिन उसने उत्तर नहीं दिया।

43मैं अपने शत्रुओं को कूटकर टुकड़े–टुकड़े करता हूँ, वे भूमि पर धूलि से हो जाते हैं। मैंने उन्हें सड़क की कीचड़ की तरह रौंद दिया।

44तूने तब भी मुझे बचाया है, जब मेरे लोगों ने मेरे विरुद्ध लड़ाई की। तूने मुझे राष्ट्रों का शासक बनाये रखा, वे लोग भी मेरी सेवा करेंगे, जिन्हें मैं नहीं जानता।

45अन्य देशों के लोग मेरी आज्ञा मानते हैं, जैसे ही सुनते हैं, तो शीघ्र ही मेरी आज्ञा स्वीकार करते हैं।

46अन्य देशों के लोग भयभीत होंगे, वे अपने छिपने के स्थानों से भय से काँपते निकलेंगे।

47यहवोा शाश्वत है, मेरी आश्रय चट्टान* की स्तुति करो! परमेश्वर महान है! वह आश्रय–चट्टान है, जो मेरा रक्षक है।

48वह परमेश्वर है, जो मेरे शत्रुओं को मेरे लिये दण्ड देता है। वह लोगों को मेरे अधीन करता है।

49वह मुझे मेरे शत्रुओं से मुक्त करता है। हाँ, तूने मुझे मेरे शत्रुओं से ऊपर उठाया। तू मुझे, प्रहार करने के इच्छुकों से बचाता है।

50यहोवा, इसी कारण, हे यहोवा मैंने राष्ट्रों के बीच में तूझ को धन्यवाद दिया, यही कारण है कि मैं तेरे नाम की महिमा गाता हूँ।

51यहोवा अपने राजा की सहायता, युद्ध में विजय पाने में करता है, यहोवा अपने चुने हुये राजा से प्रेम दया करता है। वह दाऊद और उसकी सन्तान पर सदा दयालु रहेगा।

दाऊद के अन्तिम शब्द

23 यिशै के पुत्र दाऊद के अन्तिम शब्द हैं, दाऊद ने यह गीत गाया:

परमेश्वर द्वारा महान बना व्यक्ति कहता है, वह याकूब के परमेश्वर द्वारा चुना गया राजा है, वह इस्राएल का मधुर गायक है।

2यहोवा की आत्मा मेरे माध्मम से बोला। उसके शब्द मेरी जीभ पर थे।

चट्टान परमेश्वर का नाम। इससे ज्ञात होता है कि वह एक गढ़ या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

3इस्राएल के परमेश्वर ने बातें कीं। इस्राएल की आश्रय,
चट्टान ने मुझसे कहा, "वह व्यक्ति जो लोगों पर न्यायपूर्ण
शासन करता है, वह व्यक्ति जो परमेश्वर को सम्मान
देकर शासन करता है।
4वह उषाकाल के प्रकाश–सा होगा; वह व्यक्ति मेघहीन
प्रात: की तरह होगा, वह व्यक्ति उस वर्षा के बाद की
धूप सा होगा; वर्षा जो भूमि में कोमल घासें उगाती हैं।"
5परमेश्वर ने मेरे परिवार को शक्तिशाली बनाया था।
परमेश्वर ने मेरे साथ सदैव के लिये एक वाचा की,
परमेश्वर ने यह वाचा पक्की की, और वह इसे नहीं
तोड़ेगा, यह वाचा मेरी मुक्ति है, यह वाचा वह सब है, जो
मैं चाहता हूँ। सत्य ही, यहोवा मेरे परिवार को शक्तिशाली
बनने देगा।
6किन्तु सभी बुरे व्यक्ति काँटो की तरह हैं। लोग काँटो
को धारण नहीं करते, वे उन्हें दूर फेंक देते हैं।
7यदि कोई व्यक्ति उन्हें छूता है, तो वे उस भाले के दंड
की तरह चुभते हैं जो लकड़ी तथा लोहे ले बना हो। वे
लोग काँटो की तरह होंगे। वे आग में फेंक दिये जाएेंगे,
और वे पूरी तरह भस्म हो जायेंगे।

तीन महायोद्धा

8दाऊद के सैनिकों के नाम ये हैं: तहकमोनी का
रहने वाला योशेब्यश्शेबेत। योशेब्यश्शेबेत तीन
महायोद्धाओं का नायक था। उसे एस्नी अदीनी भी कहा
जाता था। योशेब्यश्शेबेत ने एक बार में आठ सौ व्यक्तियों
को मारा था। 9दूसरा, अहोही, दोदै का पुत्र एलीआज़ार
था। एलीआज़ार उन तीन वीरों में से एक था, जो दाऊद
के साथ उस समय थे जब उन्होंने पलिश्तियों को चुनौती
दी थी। पलिश्ती एक साथ युद्ध के लिये तब आये थे जब
इस्राएली दूर चले गये थे। 10एलीआज़ार पलिश्तियों के
साथ तब तक लड़ता रहा जब तक वह बहुत थक नहीं
गया। किन्तु वह अपनी तलवार को दृढ़ता से पकड़े रहा
और युद्ध करता रहा। उस दिन यहोवा ने इस्राएलियों
को बड़ी विजय दी। लोग तब आए जब एलीआज़ार युद्ध
जीत चुका था। किन्तु वे केवल बहुमूल्य चीजें शत्रुओं से
लेने आए।
11उसके बाद हरार का रहने वाला आगे का पुत्र
शम्मा था। पलिश्ती एक साथ लड़ने लेही में आये थे।
उन्होंने मसूर के खेतों में युद्ध किया था। लोग पलिश्तियों
के सामने भाग खड़े हुए थे। 12किन्तु शम्मा खेत के
बीच खड़ा था। वह खेत के लिये लड़ा। उसने पलिश्तियों
को मार डाला। उस समय यहोवा ने बड़ी विजय दी।
13एक बार जब दाऊद अदुल्लाम की गुफा में था तीस
योद्धोओं* में से तीन दाऊद के पास आए। ये तीनों
व्यक्ति अदुल्लाम की गुफा तक रेंगते हुये गुफा तक
दाऊद के पास आए। पलिश्ती सेना ने अपना डेरा
रपाईम की घाटी में डाला था।
14उस समय दाऊद किले में था। कुछ पलिश्ती सैनिक
वहाँ बेतलेहेम में थे। 15दाऊद की बड़ी इच्छा थी कि
उसे उस के नगर का पानी मिले जहाँ उसका घर था।
दाऊद ने कहा, "ओह, मैं चाहता हूँ कि कोई व्यक्ति
बेतलेहेम के नगर–द्वार के पास के कुँए का पानी मुझे
दे!" दाऊद सचमुच यह चाहता नहीं था, वह बातें ही
बना रहा था।
16किन्तु तीनों योद्धा* पलिश्ती सेना को चीरते हुए
निकल गये। इन तीनों वीरों ने बेतलेहेम के नगर–द्वार
के पास के कुँए से पानी निकाला। तब तीनों वीर दाऊद
के पास पानी लेकर आए। किन्तु दाऊद ने पानी पीने से
इन्कार कर किया। उसने यहोवा के सामने उसे भूमि
पर डाल दिया। 17दाऊद ने कहा, "यहोवा, मैं इसे पी
नहीं सकता। यह उन व्यक्तियों का खून पीने जैसा होगा
जिन्होंने अपने जीवन को मेरे लिये खतरे में डाला।"
यही कारण था कि दाऊद ने पानी पीना अस्वीकार
किया। इन तीनों योद्धाओं ने उस प्रकार के अनेक
कार्य किये।

अन्य बहादुर सैनिक

18सरूयाह का पुत्र, योआब का भाई अबीशै तीनों
योद्धाओं का प्रमुख था। अबीशै ने अपने भाले का
उपयोग तीन सौ शत्रुओं पर किया और उन्हें मार डाला।
वह इतना ही प्रसिद्ध हुआ जितने तीन योद्धा। 19अबीशै
ने शेष तीन योद्धाओं से अधिक सम्मान पाया। वह
उनका प्रमुख हो गया। किन्तु वह तीन योद्धाओं का
सदस्य नहीं बना।
20यहोयादा का पुत्र बनायाह एक था। वह शक्तिशाली
व्यक्ति का पुत्र था। वह कबसेल का निवासी था। बनायाह
ने अनेक वीरता के काम किये। बनायाह ने मोआब के
अरियल के दो पुत्रों को मार डाला। जब बर्फ गिर रही
थी, बनायाह एक गड्ढे में नीचे गया और एक शेर को
मार डाला। 21बनायाह ने एक मिस्री को मारा जो
शक्तिशाली योद्धा था। मिस्री के हाथ में एक भाला था।
किन्तु बनायाह के हाथ में केवल एक लाठी थी। बनायाह
ने मिस्री के हाथ के भाले को पकड़ लिया और उससे
छीन लिया। तब बनायाह ने मिस्री के अपने भाले से ही
मिस्री को मार डाला। 22यहोयादा के पुत्र बनायाह ने उस
प्रकार के अनेक काम किये। बनायाह तीन वीरों में
प्रसिद्ध था। 23बनायाह ने तीन योद्धाओं से भी अधिक
सम्मान पाया, किन्तु वह तीन योद्धाओं का सदस्य नहीं
हुआ। बनायाह को दाऊद ने अपने रक्षकों का प्रमुख
बनाया।

तीस योद्धाओं ये दाऊद के अत्याधिक वीर सैनिकों का समूह था।

तीनो योद्धा ये दाऊद की सेना के सर्वाधिक वीर योद्धा थे।

तीस महायोद्धा

24तीस योद्धाओं में से एक योआब का भाई असाहेल
था। तीस योद्धाओं के समूह में अन्य व्यक्ति ये थे:
बेतलेहम के दोदो का पुत्र एल्हानन; 25हेरोदी शम्मा,
हेरोदी एलीका, 26पेलेती, हेलेस; तकोई इक्केश का पुत्र
ईरा; 27अनातोती का अबीएज़ेर; हूशाई मबुन्ने; 28अहोही,
सल्मोन; नतोपाही महरै; 29नतोपाही के बाना का पुत्र
हेलेब; गिबा के बिन्यामीन परिवार समूह रीबै का पुत्र
हुत्तै; 30पिरातोनी, बनायाह; गाश के नालों का हिद्दै;
31अराबा अबीअल्बोन; बहूरीमी अजमावेत; 32शालबोनी
एल्यहबा; याशेन के पुत्र योनातन; 33हरारी शम्मा का
पुत्र; अरारी शारार का पुत्र अहीआम; 34माका का
अहसबै का पुत्र एलीपेलेप्त; गीलोई अहीतोपेल का पुत्र
एलीआम; 35कर्म्मेली हेस्रो; अराबी पारै; 36सोबाई के
नातान का पुत्र यिगाल; गादी बानी; 37अम्मोनी सेलेक,
बेरोती का नहरै; (नहरै सरूयाह के पुत्र योआब का
कवच ले जाता था); 38येतेरी ईरा येतेरी गारेब; 39और
हित्ती ऊरिय्याह सब मिलाकर ये सैंतीस थे।

दाऊद अपनी सेना को गिनना चाहता है

24 यहोवा फिर इस्राएल के विरुद्ध क्रोधित हुआ।
यहोवा ने दाऊद को इस्राएलियों के विरुद्ध
कर दिया। दाऊद ने कहा, "जाओ, इस्राएल और यहूदा
के लोगों को गिनो।"

2राजा दाऊद ने सेना के सेनापति योआब से कहा,
"इस्राएल के सभी परिवार समूह में दान से बेर्शेबा तक
जाओ, और लोगों को गिनो। तब मैं जान सकूँगा कि
वहाँ कितने लोग हैं। 3किन्तु योआब ने राजा से कहा,
"यहोवा परमेश्वर आपको सौ गुणा लोग दे, और आपकी
आँखे यह घटित होता हुआ देख सकें। किन्तु आप यह
क्यों करना चाहते हैं?"

4राजा दाऊद ने दृढ़ता से योआब और सेना के नायको
को लोगों की गणना करने का आदेश दिया। अत:
योआब और सेना के नायक दाऊद के यहाँ से इस्राएल
के लोगों को गिनने गए। 5उन्होंने यरदन नदी को पार
किया। उन्होंने अपना डेरा अरोएर में डाला। उनका
डेरा नगर की दाँयी ओर था। (नगर गाद की घाटी के
बीच में है। नगर याजेर जाने के रास्तें में भी है।)

6तब वे तहतीम्होदशी के प्रदेश और गिलाद को गये।
वे दान्यान और सीदोन के चारों ओर गए। 7वे सोर के
किले को गये। वे हिब्बियों और कनानियों के सभी
नगरों को गए। वे दक्षिणी यहूदा में बेर्शेबा को गए। 8नौ
महीने बीस दिन बाद वे पूरे प्रदेश का भ्रमण कर चुके
थे। वे नौ महीने बीस दिन बाद यरूशलेम आए।

9योआब ने लोगों की सूची राजा को दी। इस्राएल में
आठ लाख व्यक्ति थे जो तलवार चला सकते थे और
यहूदा में पाँच लाख व्यक्ति थे।

यहोवा दाऊद को दण्ड देता है

10तब दाऊद गिनती करने के बाद लज्जित हुआ।
दाऊद ने यहोवा से कहा, "मैने यह कार्य कर के बहुत
बड़ा पाप किया! यहोवा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे
पाप को क्षमा कर। मैंने बड़ी मूर्खता की है।"

11जब दाऊद प्रात:काल उठा, यहोवा का सन्देश गाद
नबी को मिला जो कि दाऊद का दृष्टा था। 12यहोवा ने
गाद से कहा, "जाओ, और दाऊद से कहो, 'यहोवा जो
कहता है वह यह है। मैं तुमको तीन विकल्प देता हूँ।
उनमें से एक को चुनो जिसे मैं तुम्हारे लिये करूँ।'"

13गाद दाऊद के पास गया और उसने बात की। गाद
ने दाऊद से कहा, "तीन में से एक को चुनो:

1 तुम्हारे लिये और तुम्हारे देश के लिये सात वर्ष की
भूखमरी।
2 तुम्हारे शत्रु तुम्हारा पीछा तीन महीने तक करें।
3 तुम्हारे देश में तीन दिन तक बीमारी फैले।

इनके बारे में सोचो और निर्णय करो कि मैं इन में से
यहोवा जिसने मुझे भेजा है, को कौन सी चीज बताऊँ।"

14दाऊद ने गाद से कहा, "मैं सचमुच विपत्ति में हूँ!
किन्तु यहोवा बहुत कृपालु है। इसलिये यहोवा को हमें
दण्ड देने दो! मुझे मनुष्यों से दंडित न होने दो।"

15इसलिये यहोवा ने इस्राएल में बीमारी भेजी। यह
प्रात:काल आरम्भ हुई और रुकने के निर्धारित समय
तक रही। दान से बेर्शेबा तक सत्तर हजार लोग मर गए।
16स्वर्गदूत ने अपनी भुजा यरूशलेम की ओर उसे नष्ट
करने के लिये उठाई। किन्तु जो बुरी बातें हुई उनके
लिये यहोवा बहुत दु:खी हुआ। यहोवा ने उस स्वर्गदूत से
कहा जिसने लोगों को नष्ट किया, "बहुत हो चुका!
अपनी भुजा नीचे करो।" यहोवा का स्वर्गदूत यबूसी
अरौना के खलिहान के किनारे था।

दाऊद अरौना के खलिहान को खरीदता है

17दाऊद ने उस स्वर्गदूत को देखा जिसने लोगों को
मारा। दाऊद ने यहोवा से बातें कीं। दाऊद ने कहा,
"मैंने पाप किया है। मैंने गलती की है। किन्तु इन लोगों
ने मेरा अनुसरण भेड़ की तरह किया। उन्होंने कोई
गलती नहीं की। कृपया दण्ड मुझे और मेरे पिता के
परिवार को दें।"

18उस दिन गाद दाऊद के पास आया। गाद ने दाऊद
से कहा, "जाओ और एक वेदी यबूसी अरौना के खलिहान
में यहोवा के लिये बनाओ।" 19तब दाऊद ने वे काम
किये जो गाद ने करने को कहा। दाऊद ने यहोवा के
दिये आदेशों का पालन किया। दाऊद अरौना से मिलने
गया। 20जब अरौना ने निगाह उठाई, उसने राजा (दाऊद)
और उसके सेवकों को अपने पास आते देखा। अरौना
बाहर निकला और अपना माथा धरती पर टेकते हुए

प्रणाम किया। 21अरौना ने कहा, “मेरे स्वामी, राजा, मेरे पास क्यों आए हैं?”

दाऊद ने उत्तर दिया, “तुमसे खलिहान खरीदने। तब मैं यहोवा के लिये वेदी बना सकता हूँ। तब बीमारी रुक जायेगी।”

22अरौना ने दाऊद से कहा, “मेरे स्वामी राजा, आप कुछ भी बलि-भेंट के लिये ले सकते हैं। ये कुछ गायें होमबलि के लिये हैं अग्नि की लकड़ी के लिये दंवरी के औजार तथा बैलों का जूआ भी है। 23हे राजा! मैं आपको हर एक चीज देता हूँ।” अरौना ने राजा से यह भी कहा, “यहोवा आपका परमेश्वर, आप पर प्रसन्न हो।”

24किन्तु राजा ने अरौना से कहा, “नहीं! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, मैं तुमसे भूमि को उसकी कीमत देकर खरीदूँगा। मैं यहोवा अपने परमेश्वर को कुछ भी ऐसी होमबलि नहीं चढ़ाऊँगा जिसका कोई मूल्य मैंने न दिया हो।”

इसलिये दाऊद ने खलिहान और गायों को चाँदी के पचास शेकेल से खरीदा। 25तब दाऊद ने वहाँ यहोवा के लिये एक वेदी बनाई। दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाई।

यहोवा ने देश के लिये उसकी प्रार्थना स्वीकार की। यहोवा ने इस्राएल में बीमारी रोक दी।